वाणी

BIRLA INSTITUTE OF TECHNOLOGY & SCIENCE, PILANI
BITS PILANI
Bits Confessions
Compliments
Proposals
Founder's Day
APOGEE
GODLEVEL
DU ki kudiyaan
COUNTER STRIKE
Zimbra
10P
DTC
OB
FD1
Quora
redBus.in
GHOT
Batch Snaps
ROHIT PAMNANI
हिन्दी प्रेस
K.M. BIRLA
PS1
Common Room
GHOTBOARD
Galleria
FOREVER ALONE Chamber Consultation Hour
FAREWELL INTRO
Write Up!
Enthu
BUMPS
CALL OF DUTY MW
GN 137
Wingies
QT
ASSOCS
ADITYA BIRLA
B1A2
DC++
Bhajan
0% attendance
XXXBOB
ACCESS_TO_THE_WEBPAGE_HAS_BEEN_DENIED!!
11 PM
JAMUN ICE CREAM
Lite
gen
MAKE UP
LEAD
INNO VATE
ACH IEVE
ITS MAGIC
DeZire
YES READY SMILE!!
Grubs
Gnite perms
talk
LTC
ANC
PS
Diary
COMPRE
T1
T2
A
B
C
D
E
A-
B-
C-
Sodexo
No.1 Private College
I ♥ BITS
RAF
F.R.I.E.N.D.S.
SWD Search
Melody
MAFIA!!
HOLI
BBMF
Audi
वाणी
LGMF
Havmor ICE CREAM
CGPA
PAHADI
SKYLAB
REFRESHMENT BAR
SINCE 1964
Shehnaz
BUNTY
Punjabi Dhaba
Oasis
SHAPOORJI PALLONJI
POCKET TANKS
SangSha!!
Music Nite
ज्ञानं परमं बलम्
Dualites
172.30.1.1
inbloom
Bitsians for Each Other
DEAN NATTU

अनुक्रमणिका

37	एक चीख सैकड़ों पुकार	ईशान श्रीवास्तव
39	कौन हूँ मैं ???	नीतिका सोहाने
42	लहरों की ज़ुबानी	अज्ञात
43	आखिरी गुज़ारिश	शिवम मसूरिहा
45	सब जानते हैं	पुरुजित सिंह चौहान
49	एक चिट्ठी सब कह जाती है	ईशान श्रीवास्तव
52	आज भीगते हैं चल	राजेश विजयवर्गीय
53	पिलानी की बारिश	अर्चित अग्रवाल
55	जीतने की ललक	सौरभ बियानी
59	शाम-ए-गज़ल	आवेश कुमार सिंह
60	तन्हाई	विनायक केसरवानी
65	कैसा समाजवाद???	रवि गुप्ता
65	सब अच्छा लगने लगता है	माधव वार्ष्णेय
67	अच्छा है !!!	प्रकाश सिंह
71	तुम निश्चिन्त रहना	अनुराग श्रीवास्तव
75	इस बरस की होली	अर्चित अग्रवाल

34. बिट्सियन स्टार्ट-अप्स................................आलोक सोनी

40. बिट्स पिलानी—ममता के झरोखे से...............रवि, ईशान

50. पी.एस. डायरीज़............................अनुजा गुप्ता, श्रेय कपूर

56. बिट्स पिलानी : समाज के हित में.................आकृति, रवि

62. बिट्स की संस्कृति :
एक अनोखी मिसाल.........................मॉनिका, नीतिका, रजत

74डेक्सटर 'कार्टून' से डेक्सटर 'सिरीज़' तक................पारस

72. बिट्सियन लाइब्रेरी.......................................अंकिता , अनंत

44. ज़िन्दगी तेरे रूप अनेक.................................विक्रांत शर्मा

46. शोध यात्रा : एक सफ़र
सच्चाई की ओर....................................अंजुम धमीजा

48. पेटूलाल कुर्सीतोड़...रवि गुप्ता

54. आज़ादी? क्यों मज़ाक करते हो भई .... रवि गुप्ता

61. ठरकी इंडिया...अर्चित अग्रवाल

66. द्वंद्व..सौरभ बियानी

68. स्वामी विवेकानंद ....विक्रांत शर्मा

वो कहते हैं कि जिस सपने को हकीकत से बड़े पैमाने पर जिया हो उस सपने का बखान करना भी ज़रा मुश्किल सा लगता है| शहर की तंग गलियों से दूर बिट्स की इस छोटी सी दुनिया में जिए चार साल ऐसे ही एक सपने की तरह होते हैं | माना कि ये दुनिया केवल तीन सौ एकड़ में सिमटी है, घूमने को दो-चार बगिया हैं, खाने के लिए गिनती बराबर स्थान और लोगों के नाम पर सिर्फ़ पांच हज़ार की ये भीड़ है | पर बावजूद सबके ये वही दुनिया है जहाँ हमने और आपने अपने जीवन के सबसे बहुमूल्य सबक सीखे हैं, दोस्ती निभाने के सलीके तो कभी खुद को पहचानने के तरीके खोजे हैं | पिलानी की इसी दुनिया के किसी कोने में खिलखिलाकर हँस देने वाले किस्से छुपे हैं तो कभी आँखें नम कर दें ऐसी यादें बसी हैं | वो सुनहरा वक्त जो हर शख्स अपने जीवन में बार-बार जीना चाहता है, वो कैम्पस की इन्हीं हवाओं में बिखरा हुआ है| कुछ बरस पहले शायद मैं ऐसी भावुक बातें आपसे ना कह पाता और शायद इस पल भी कॉलेज की दुनिया में नए-नए कदम रखने वाले छात्र इन बातों की सार्थकता से स्वयं को जोड़ कर नहीं देख पा रहे होंगे मगर यकीन मानिए बीते वर्षों में इस दुनिया को जितनी करीब से देखा और जिया है उसके बाद मैं दावे से कह सकता हूँ कि ये सब सच है...बिट्स पिलानी—सचमुच एक जादूई दुनिया !!!

जिस दिन मुझे इस प्रतिष्ठित पत्रिका को सँवारने की ज़िम्मेदारी मिली थी मन में एक नया उत्साह और स्फूर्ति जगी थी मगर साथ ही साथ एक संशय था कि क्या कागज़ के इन पन्नों में मैं इस कैम्पस के हर कोने से निकलने वाली एक कहानी को ज़ुबान दे पाउँगा??? साल भर मैं बिट्स के अंदर इस छोटी सी दुनिया से दोस्ती करने की कोशिश करता रहा| कक्षाओं की मेज़ पर लिखे कुछ शब्द हों, या भवन के कमरों की दीवारों से निकलते लफ्ज़, लाइब्रेरी की किताबों के बीच होती गपशप हो या डाल पर बैठे पक्षियों का कलरव, वो मंदिर में माँ सरस्वती का वरदान हो या क्लॉक टावर की बरसों पुरानी शान, बिड़ला वालों की देन ये अलौकिक गुरु-शिष्य परंपरा हो या पिलानी की पोटली में लिपटी एक प्राचीन संपदा, यही उम्मीद थामे चला था कि एक दिन ज़रूर इन सभी के अल्फाज़ सुनकर लोगों तक पहुँचा सकूँगा | आज मैं कह सकता हूँ कि अगले कुछ पन्नों को पलटते हुए आप बिट्स पिलानी के अनोखे सफ़र पर निकल पड़ेंगे | एक सफ़र जिसमें कभी जीवन की आशा है, कभी ज़िन्दगी से निराशा है, कहीं अदम्य विश्वास है, कहीं टूटता भरोसा है, कहीं सच होते सपने हैं, कहीं बिखरते कुछ ख़्वाब हैं | इसमें संगीत है किसी गूंगी पीर का, सन्देश है मानो किसी फ़कीर का | ये सफ़र है ज़मीन से ऊपर एक उड़ान का, ज़रा गौर से देखना ये आईना है खुद से खुद की पहचान का | तो बस इन पन्नों को पलटते चलिए...पढ़िए और आनंदमग्न होते रहिये |

पेश है आपके समक्ष "वाणी 2013" !!!

ईशान श्रीवास्तव

बिट्सियन स्टार्ट-अप्स

- आलोक सोनी

"अगर कोई कंपनी मुझे नौकरी नहीं देती तो मैं अपनी कंपनी खोलकर तुझे नौकरी पे रख लूँगा यार...!!!" किसी सेंटी सेम की सुहानी शाम को विंग के किसी कोने में बैठकर बतियाते दोस्तों के बीच मस्ती-मज़ाक के लहज़े में कही गयी ऐसी कई बातों को ना जाने कितने बिट्सियन्स ने साकार करके दिखाया है| अपने कॉलेज के दिनों में शायद ही किसी ने सोचा होगा कि आने वाले वक्त में उन्हीं के कॉलेज की पत्रिका में उनकी कंपनी की अभूतपूर्व सफलता को लेकर उनका नाम अंकित होगा| शायद इसे ही कहते हैं सपनों का सच होना|

हरीश सिवरामाकृष्णन, गणेश रामनागार्जन — 1998

बिट्स पिलानी ने तकनीक के अलावा संगीत के क्षेत्र में भी देश को ये समकालीन कार्नेटिक रॉक बैण्ड दिया है| हरीश एक गायक एवं वायलिन वादक हैं तथा गणेश ड्रम्स व पार्श्व गायकी का भार सँभालते हैं| सन टी.वी. में प्रदर्शित एक शो "ऊ ला ला ला" में ए.आर. रहमान द्वारा विजेता घोषित किये जाने के बाद इन्होंने पीछे मुड़ के नहीं देखा| मशहूर गायिका श्रेया घोषाल के संग "लाइव अगेन" नामक गीत के लिए हुआ सहयोग उनकी सभी उपलब्धियों में सबसे ख़ास और यादगार है|

फणीन्द्र समा, सुधाकर पसुपुनुरी, चरण पद्मराजू — 1998

हर नवरचना की तरह रेडबस की शुरुआत भी काफ़ी रोचक है | बैंगलोर में कार्यरत बिट्स पिलानी के ये छात्र बेहतरीन कंपनियों में बखूबी काम कर रहे थे| इनमें से एक को 2005 की दिवाली अपने घर पर मनानी थी परन्तु समय की अनिश्चितता के चलते वो अब केवल बस से ही जा सकता था| हालाँकि बैंगलोर की तेज़ रफ़्तार दुनिया में ट्रैफिक के चलते उसे बस की टिकट भी नहीं मिली| उस वक्त उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि ट्रेन और हवाई यात्रा के साथ-साथ बस की यात्रा के लिए भी ऑनलाइन टिकट बुकिंग आवश्यक है| यह विचार अत्यंत सम्मोहक था क्योंकि अब तक भारत में ऐसा कुछ नहीं हुआ था | और इस प्रकार बिट्स से उपजे कुछ चुनिंदा छात्रों ने नींव डाली इस बेहद सफ़ल स्टार्ट-अप की |

राकेश वर्मा — 1968

देश की अग्रिणी वेबसाइट "मैप माय इंडिया" की सफलता से तो सभी वाकिफ़ हैं पर क्या आप ये जानते हैं कि इस प्रख्यात स्टार्ट-अप के पीछे भी एक बिट्सियन का ही सपना और मेहनत निहित है| जनरल मोटर्स के शानदार चल रहे करियर को त्यागकर 1990 में राकेश भारत लौटे और अपनी पत्नी संग "CE Info Systems" की नींव रखी| तत्पश्चात GIS की बढ़ती लोकप्रियता और महत्त्व को आंकते हुए उन्होंने 2004 में पूरे देश का डिजिटल नक्शा तैयार किया जो आज मैप माय इंडिया के नाम से मशहूर है|

समय कोहली — 2005

ग्रे ऑरेंज रोबोटिक्स एक और बिट्सियन स्टार्ट अप है जिसकी अपार सफलता प्रत्यक्ष दिखाई दे रही है| बिट्स पिलानी की "टीम अक्युत" के संस्थापक एवं वर्तमान सदस्यों से सजी इस स्टार्ट अप की कोशिश है ह्युमेनोइड रोबोट के क्षेत्र में नयी उपलब्धियाँ हासिल करना और भारत में रोबोट्स के प्रति नज़रिए में बेहतर बदलाव लाना| इसके अलावा ये देश भर में विभिन्न स्कूल एवं कॉलेज स्तरों पर छात्रों के लिए वर्कशॉप का भी आयोजन करवाते हैं |ये स्टार्ट-अप वास्तव में बिट्स की शान है |

अजय चतुर्वेदी — 1991

आज की कारोबारी दुनिया का एक और जाना पहचाना नाम – हारवा | यह अनोखा स्टार्ट-अप देश का प्रथम ग्रामीण बी.पी.ओ. है जिसकी सबसे बड़ी खासियत है कि ये केवल महिलाओं को रोज़गार प्रदान करता है| बिट्स से निकलने के बाद श्री अजय ने पेनिसिल्वेनिया विश्वविद्यालय से आगे की पढ़ाई उत्तीर्ण की और फिर मार्च 2010 में गुडगाँव से कुछ दूर टिकली अकिलामपुर गांव में इस कंपनी की स्थापना की| हाल ही में हारवा ने एक और बिट्सियन स्टार्ट-अप "सोर्स पिलानी" को अधिगृहित किया है| इसका उद्देश्य है 2014 तक बिहार और हरयाणा में 5000 महिलाओं को रोज़गार प्रदान करना|

एल्फोंसो रेड्डी — 1996

इस बेहतरीन स्टार्ट-अप के पीछे भी एक बिट्सियन की ही जादूगरी है| बिट्स से इंजीनियरिंग करने के बाद उन्होंने लंदन की एक नामी कंपनी *फ्लेक्सोट्रॉनिक्स* एवं *सेस्केन* में काम किया और फिर इस स्थिरशील नौकरी को त्यागकर अपने स्टार्ट-अप में पूरी शिद्दत के साथ भरोसा किया| यह एक ऑनलाइन शॉपिंग वेबसाइट है जो छोटे नगरों और कस्बों की ज़रूरतों को समझते हुए उनके लिए खरीददारी आसान बनाने के प्रति केंद्रित है | आज फैबमार्ट 20 भारतीय शहरों में गति शील है और 2013 तक 1000 शहरों में अपना कारोबार विस्तृत करने का लक्ष्य रखती है|

ऑनलाइन प्रसाद – गुंजन मॉल – 2006***P

देश के अग्रिम स्टार्ट-अप्स में शामिल ऑनलाइन प्रसाद एक बिट्सियन दिमाग की उपज है| हाल ही में शुरू हुई यह कंपनी लोगों की आस्था को जोड़ते हुए देश भर के मंदिरों का प्रसाद लोगों तक पहुँचाने का काम करती है|

सिएरा एटलांटिक – राजू रेड्डी – 1976***P

दो दशक पूर्व शुरू हुई इस कंपनी के पीछे भी एक बिट्सियन का हाथ है| श्री राजू रेड्डी जी द्वारा नींव रखे जाने के बाद इस आई.टी. सर्विस कंपनी को भारत में शीर्ष 20 उत्तम कार्यस्थलों में से एक होने का गौरव प्राप्त हो चुका है| 2011 में हिताची कंसल्टिंग द्वारा ये कंपनी अधिगृहित की जा चुकी है|

• TunePatrol	ब्रिजेश भारद्वाज, सौरभ गुप्ता, प्रोनूत बर्काकती	2008
• Exotel	शिवकुमार गणेसन, सिद्धार्थ रमेश, विजय शर्मा	2007
• ColonK	कृष्णा चैतन्य	2005
• Phyzok	लोहित साहू	2005
• Oodio Studio	आकाश रमण	2004
• GHARPAY	अभिषेक नायक	2005
• FrameBench	रोहित अग्रवाल, विनीत मार्कन	2007
• Aporv	सुदीप दत्ता	1995
• Innovese	अंकित गुप्ता	2007
• NextGenPMS	अभिषेक हुम्बद	2005

- Patent Yogi
- Taxi4Sure
- Examify
- Jombay
- Mauka
- Sattva Media & Consulting
- PlayCez
- Forus Health
- ClickDesk
- National Social Entrepreneurship Forum (NSEF)

हमारे विश्वविद्यालय से निकलने वाली प्रतिभाओं के स्तर की एक झलक दिखाने के लिए शायद इतने स्टार्ट-अप्स काफ़ी हैं | किन्तु बिट्सियन छात्रों के इन बेहतरीन कामों की सूची इससे कहीं ज़्यादा बृहद है जो जगह की कमी के चलते हम आप तक नहीं पहुँचा सके | परन्तु अधिक जानकारी के लिए आप **"yourstory.in"** की सहायता ले सकते हैं | इस अंक में प्रस्तुत सभी जानकारियाँ हमें यहीं से प्राप्त हुई हैं | हम आशा करते हैं कि हर वर्ष आप कुछ ऐसे नए स्टार्ट-अप्स की सूची बनाकर वाणी टीम को दें जिससे कि ये स्टार्ट-अप्स की जानकारी हम सभी को देने का सिलसिला बनाये रखें|

एक चीख सैकड़ों पुकार

दुबकी हुई पिता की महफ़ूज़ सी गोद में,
लिपटी हुई माँ के ममतामयी आँचल में,
मैं आई थी इस जहाँ में कुछ इस तरह से,
कि गूँज उठी थी किलकारियां किसी के आँगन में ||

दिनभर मैं खेलती थी, पापा को कभी बैठने ना दिया,
कितनी रातें तो मैंने माँ को भी सोने ना दिया,
थी उनकी लाडली तो यकीनन सताया मैंने बहुत,
पर उनकी मुस्कुराहटों को कभी मैंने खोने ना दिया ||

चुलबुली थी, चहकती थी, मुस्कुराना चाहती थी मैं,
अपनी शरारतों से हर चेहरे पे रौनक लाना चाहती थी मैं,
लोग सपना पूछते मेरा मुझसे जब कभी,
जीना है ज़िन्दादिली से बस यही कह पाती थी मैं ||

ज़िन्दगी में फिर मेरे दिल को प्यार ने गुदगुदाया,
उस सनम ने मुझे प्यार करना बड़े प्यार से सिखाया,
जो ख्वाब देखती है हर लड़की, उसे मैं जीने लगी थी,
उसने मुझे आँखों के रास्ते अपनी धड़कन में बसाया ||

ज़िन्दगी कुछ अपनी ही मस्ती में चल रही थी,
मैं भी बेफ़िक्र सी उस शाम बस से गुज़र रही थी,
कि अचानक हैवानियत का ऐसा मंज़र सामने आया,
मेरी पीर हो गयी गूंगी, रूह हर पल सिहर रही थी ||

सरे आम, सरे राह, सियाह रात में,
तड़पती रही मैं हर पल मदद की आस में,
कुचलकर मार ही देते तो यातना कम होती,
झुलसता हुआ छोड़ गए मुझे बेबसी की आग में ||

शायद सपने नहीं बुनने थे मुझे,
ज़रा देर से समझ आया...
बेटी थी घर की मैं, बेटा बनने चली थी,
हर मोड़ पे मुझे दुनिया ने मेरी असलियत से मिलाया ||

मैं सिहरती थी, बिखरती थी, सहमती थी,
वो शख्स दिखाता मुझपे अपना ज़ोर,
समाज ने भी समझा मुझे कमज़ोर...
मैं बेज़ुबान, बेगुनाह बस खुद से ही शिकवा करती थी ||

दुनिया कहती थी उनकी फितरत है,
वो खेलते हैं...खेलकर तोड़ देते हैं,
मेरी ज़िन्दगी तो मानो मिट्टी का खिलौना है,
वो जिस सांचे में चाहें मोड़ देते हैं ||

माना ये तन नश्वर है, कल को इसे छोड़ जाउंगी,
पर आत्मा की चुनरी पे लगे दाग कैसे धो पाऊँगी,
समाज की नज़रों से छुपकर तो शायद जी भी लूँ,
बंद कमरे में इन नज़रों से अपना अक्स कैसे देख पाऊँगी ||

हाथ में मोमबत्ती, ज़ुबान पे नारे, मगर सोच वही,
आँखों में भले ही गुस्सा हो, मगर दिल में शोक नहीं,
जो हुआ वो गलत था, ये सब जानते हैं,
ज़रूरत है नज़रिया बदलने की, समाज के लोग नहीं ||

ये किस्सा सिर्फ़ हमारे भारत का नहीं,
ये मुद्दा सिर्फ़ किसी अदालत का नहीं,
ये कोशिश है बदलने की फितरत-ए-इंसान,
ये शोर सिर्फ़ किसी निर्भया की तड़पती हालत का नहीं ||

उस आँगन में गूँजती किलकारी चुप हो गयी,
मेरे अपनों के चेहरों से मुस्कुराहटें भी लुप्त हो गयी,
मेरी मौत से शायद कोई बदलाव आएगा यहाँ कल,
इस उम्मीद को थामे मैं इस जहाँ से दूर हो गयी ||

- ईशान श्रीवास्तव

कौन हूँ **मैं** ?

आज मन ने खुद से यह सवाल किया...

आखिर कौन हूँ मैं ?

जवाब आया –अपने अस्तित्व की खोज में खोई हुई,

अपनी ही दुनिया में सोई हुई ,

एक छवि है तू |

बस इतना ही?

तो मुझमें और बाकी लोगों में फर्क क्या?

पहचान तो सबको ही अपनी संजोनी है,

मोती-रुपी खुशियाँ जीवन के धागे में पिरोनी हैं...

तो फिर यह मनुष्य और मनुष्य का भेद क्यों?

काले-गोरे, अमीर-गरीब, शहर-गाँव का फेर क्यों?

क्या इसीलिए बनाया था इंसान को भगवान ने?

कि अपनी मूर्खता में वह अपने ही सत्य को भुला बैठे !!!

कभी ज़मीन के दाम पे,

तो कभी किसी मंदिर के नाम पे !

कभी धर्म और आस्था पर,

तो कभी आरक्षण व्यवस्था पर !

जगह-जगह पर क्लेश की छाया छाई है,

जिधर देखो वहीँ पर, मतभेद है, लड़ाई है-

आखिर ऐसा कब तक चलेगा ?

मनुष्य क्या मनुष्य का दुश्मन ही रहेगा?

दिया हुआ है हमें ये जीवन जिसका,

क्या नहीं है उसके पास भी कोई उपाय इसका?

ना जाने ये सिलसिला कब जाकर ठहरेगा...

संसार में अमन का परचम न जाने कब फहरेगा ???

पर इस सब के बीच में मैं कहाँ हूँ?

इस विशाल दुनिया में अपने अस्तित्व को खोजती हुई,

एक मामूली से अर्थहीन जीवन को जीती हुई,

और हर पल एक सवाल के जवाब को ढूँढती हुई-

आखिर कौन हूँ मैं ...?

कौन हूँ मैं...?

- नीतिका सोहाने

बिट्स पिलानी - ममता के झरोखे से

ईशान श्रीवास्तव,
रवि गुप्ता

बालक के जन्म के पूर्व से ही माँ उसे लेकर अनेकों स्वप्न व भविष्य के ताने-बाने बुनने लगती है | आज हर माँ का एक बड़ा स्वप्न है कि अपने बालक को उच्च शिक्षा दिलाकर उसे कठिनतम प्रतिस्पर्धा के लिए हरसंभव तरीके से तैयार कर सके | उच्च शिक्षा के तकनीकी पक्ष में IIT, NIT, BITS जैसी अनेकानेक संस्थाएं उपलब्ध हैं परन्तु इनमें से बिट्स का नाम ज़रा ख़ास-सा, ज़रा अपना-सा लगता है क्योंकि मेरा बेटा इस बेहतरीन विश्वविद्यालय का छात्र है| बिट्स में समाजवाद व समानता का साम्राज्य है – कोई जाति, धर्म, लिंग तथा प्रादेशिकता का भेद नहीं है, मात्र योग्यता ही प्रवेश का आधार है | हर विद्यार्थी जो कच्चे घड़े की भाँति होता है, उसे पक्का करना, उस पर रंग चढ़ाना, चित्र उकेरना तथा समाजोपयोगी बनाना यहाँ की विशिष्टता है | बिट्स के संस्थापक बड़े ही पुण्यकीर्ति, परोपकारी व दूरदर्शी रहे, जिन्होंने ज्ञान का कल्पवृक्ष लगाकर युगों-युगों तक जनमानस के उत्थान हेतु मार्ग प्रशस्त कर दिया|

रामचरितमानस में वर्णित है कि तीन गुणों के अधिष्ठाता एवं निर्विकारी परब्रह्म श्री नारायण की महिमा का शेषनाग जी अपने सहस्त्र मुखों व माँ सरस्वती अपनी वाणी से भी पूर्णतः हूबहू वर्णन नहीं कर सकते | मैं इस तथ्य की गहराई तक तो नहीं पहुँच सकती, परन्तु बिट्स पिलानी के वातावरण, सुविधाओं, विश्वपटल पर ज्ञानामृत की वर्षा, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में इसकी भूमिका की यथार्थ अभिव्यक्ति कर पाने में मैं स्वयं को बहुत बौना व विफल ही पाती हूँ |

अध्ययन के लिए अपने बालक का बिट्स पिलानी में प्रवेश सच में एक स्वप्न ही था जो ईश्वरीय अनुकम्पा से पूर्ण हुआ | पिलानी जाने का सुअवसर आया और मैंने जाकर देखा तो वहाँ का सुरम्य वातावरण, बसावट, अध्ययन के तौर-तरीके सभी मनमोहक, आकर्षक एवं सुचारू व्यवस्थित थे | *"मरुधरा में पुष्पों से भरा एक बगीचा सच में "एक दिवा-स्वप्न" सा किन्तु परमसत्य भी"* | माँ अपने बालक को अपने से दूर भेजने में बहुत घबराती व सकुचाती है, उसका हृदय सदैव आशंकित रहता है कि उसके लाल को खाने-रहने-पढ़ने-लिखने-स्वास्थ्य-सुरक्षा को लेकर कोई परेशानी या आभाव प्रतीत ना हो | किन्तु बिट्स ने हमारी समस्त आशंकाओं को दूर कर दिया |

संस्थान भले ही श्रेष्ठतम हो, कैम्पस का वातावरण कितना ही अनुकूल हो, सुविधाएँ सारी उसके पास हों, मगर वो मुझसे दूर है ये बात मुझे हर रात सताती है| और मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस लेख को पढ़ रही हर माँ मेरे इस विचार से अवश्य सहमत होगी| अपने बेटे के प्रति एक माँ का स्वार्थ कोई सीमाएं नहीं जानता और मैं कोई अपवाद नहीं हूँ| घर से सैकड़ों मील दूर, वो तो शायद अपनी नयी दुनिया में मशगूल हो चुका होगा मगर एक माँ के लिए तो उसका बेटा ही उसकी दुनिया है| फ़ोन पर उसकी आवाज़ सुनकर दिल को जो सुकून मिलता है उसकी कोई उपमा नहीं है| छुट्टियों में जब वो घर आता है तो इन आँखों में एक अलग सी चमक होती है| सुस्त हो चुके हाथ अचानक उसके मनपसंद पकवान बनाने के लिए आतुर हो जाते हैं| बिट्सियन शब्दावली से भरपूर उसकी कई बातें मेरी समझ में नहीं आतीं मगर फिर भी सुनना अच्छा लगता है| दिल नहीं करता कि उसे अपने से दूर जाने दूं पर उसकी आँखों में बसे सपनों को देखकर मैं अपनी आँखों से छलकते अश्कों को छुपा लेती हूँ|

वो कहते हैं कि घर से दूर हॉस्टल की दुनिया एक छात्र के लिए खुद को जानने और परखने का पहला और सबसे अहम दौर होता है लेकिन ये भी उतना ही सच है कि बेटे के दूर जाने से एक माँ को अपनी ममता का वो पहलू जानने को मिलता है जो उसने कभी महसूस नहीं किया था| मैं हर पल यही कामना करती हूँ कि वो जहाँ भी रहे कामयाब हो, सुरक्षित हो, दिल से खुश हो और मुझे याद करता हो |

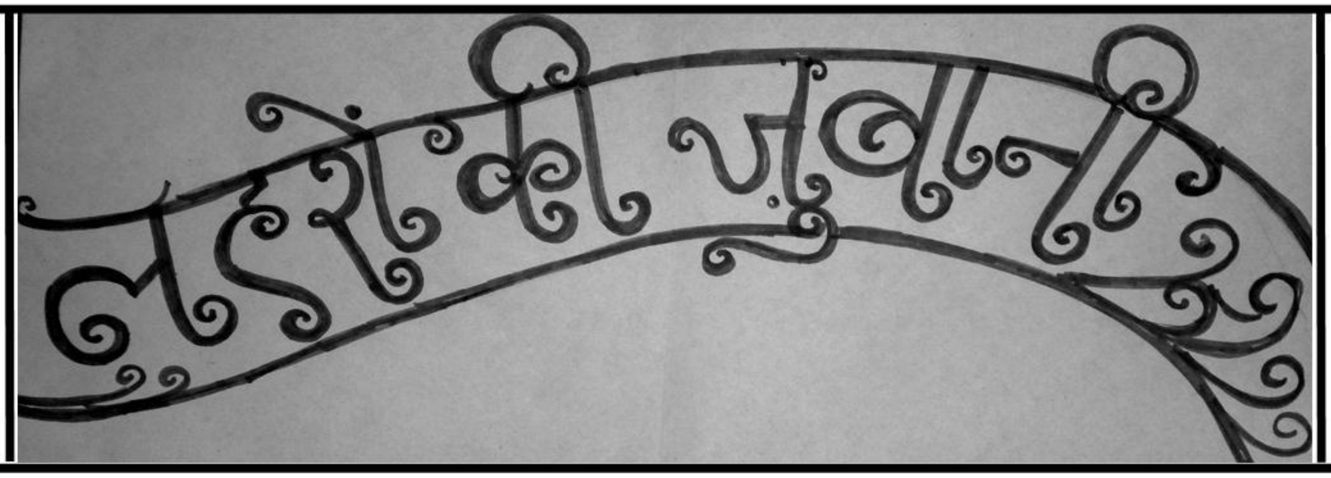

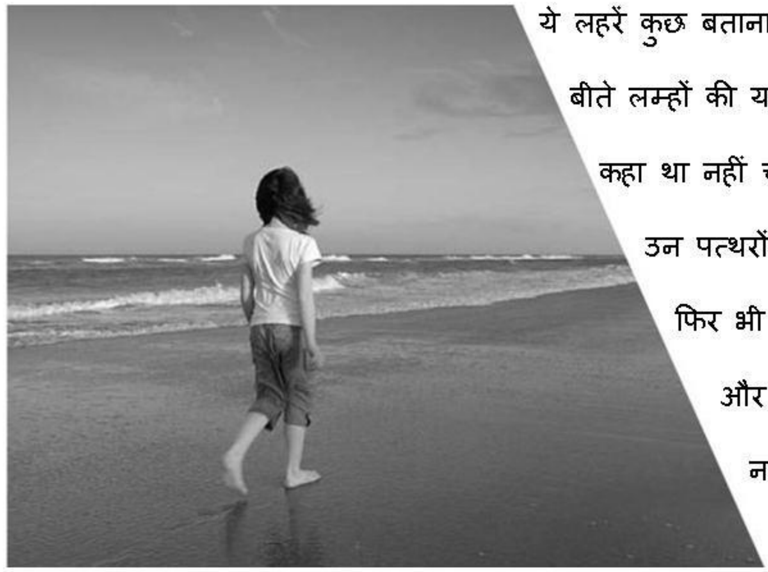

ये लहरें कुछ बताना चाहती हैं शायद,

बीते लम्हों की याद दिलाना चाहती हैं शायद,

कहा था नहीं चलना मुझे उन पगडंडियों पे दोबारा,

उन पत्थरों पर चलना मुश्किल है बिना सहारा,

फिर भी ये लहरें मेरे निशान मिटाने की बात करती हैं,

और सिमटते हुए दबे सीप पैरों तले सरका जाती हैं...

नहीं शौक मुझे नए मिट्टी के घर बनाने का

नहीं मन उनमें फिर से अरमां जगाने का,

थक गयी हूँ उन पैरों के निशाँ को मिटता देख,

अब नहीं डरती उन लहरों में ख़ुद को भीगता देख...

समझ गयी हूँ नया सूरज इन लहरों से ही निकलेगा,

जान गई हूँ अंत में वो इन लहरों में ही डूबेगा,

अलग लगते हैं अब सागर के किनारे मुझे,

नहीं समझ आ रहे अब उसके इशारे मुझे...

वाकिफ़ हूँ इन लहरों की ताकत से मैं,

बहुत दम है इनमें मुझे बहा के ले जाने की,

मगर इस बार नहीं,

इस बार मन बना चुकी हूँ इसी रेत में अपने कदम जमाने की...!!!

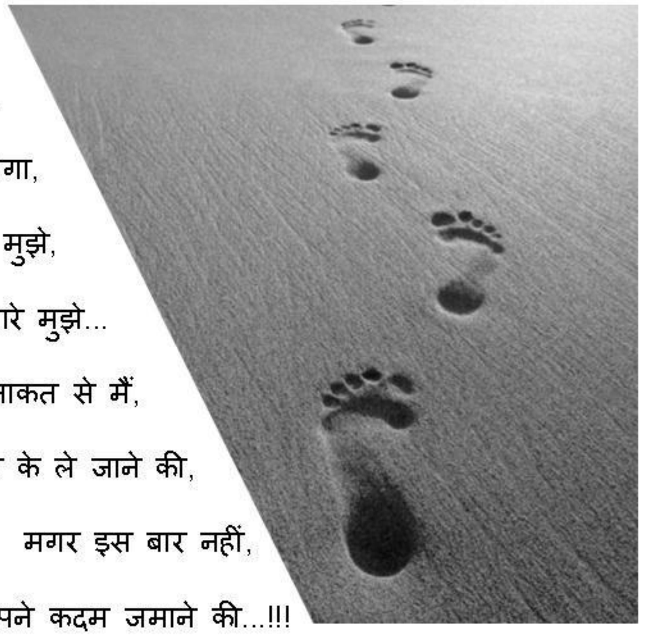

- अज्ञात

हाँ जगी हूँ मैं,

हाँ, जगी ही तो हूँ पिछले एक साल से,

मान चुकी हूँ इस चारदीवारी को ही अपना है कहना,

ये सितम नहीं, ये गुनाह हैं जो मुझे हरदम है सहना ||

रोज़ दिखते हो तुम, हाँ रोज़,

मेरा ध्यान रखते हुए,

देखा है मैंने तुम्हें रोज़ नया गुलाब लाते हुए,

और देखा है तुम्हें वो नम आँखें छुपाते हुए ||

रोने का मन करता है,

तुम्हें मेरे लिए ज़िन्दगी व्यर्थ जीता देख,

आँसू भी बहना चाहते हैं,

तुम्हें इस रूह से आशा रखते देख,

हर दिन आते-जाते रहते हैं,

कुछ जाने-पहचाने चेहरे,

चंद दुःख बाँटते हैं, दो आँसू गिरा जाते हैं,

दर्द झेलता देख बेजान शरीर को मेरे ||

महसूस किया है मैंने तुम्हें सँभालते हुए,

देखा है तुम्हें हर बार संबल रखते हुए,

पर पहली बार जाना वो दर्द तुम्हें यूँ सिसकता देख,

आज पहली बार तुम्हें यूँ टूटता देख ||

बहुत अच्छा लगता है तुम्हारा ये साथ,

पर अब नहीं, अब तो ज़िन्दगी भी छोड़ रही है हाथ,

मन करता है बोलूँ लौट जाओ तुम अभी,

बस याद रखो वो दिन जब ख़ुश थी मैं कभी,

नहीं चाहती तुम वो सुनहरे लम्हें भी भूल जाओ,

कोई पूछे कैसी थी मैं तो बिना रोये बता भी ना पाओ ||

अब बस तुम्हें खुल के हँसते देखने की चाह है,

भरोसा करो मुझे आज भी तुम्हारी उतनी ही परवाह है,

कहना चाहती हूँ तुमसे बहुत कुछ,

मगर आवाज़ है कि निकलती ही नहीं,

रोना चाहती हूँ तेरे-मेरे इस दर्द पर,

मगर कमबख्त ये अश्क भी अब छलकते नहीं,

जीना चाहती हूँ तेरे साथ, पर अब ये मुमकिन नहीं,

मरना चाहती हूँ पर लगता है मौत में भी अब सुकून नहीं ||

- शिवम मसूरिहा

ज़िन्दगी तेरे रूप अनेक

इस ज़िन्दगी के कितने रूप हैं? शायद इस प्रश्न का उत्तर दे पाना सरल नहीं है; कम से कम मेरे जैसे आम व्यक्ति के लिए तो नहीं, हाँ यदि कोई दार्शनिक दृष्टि के साथ विकसित हुआ हो तो वह अवश्य इसके उत्तर तक पहुँच सकता है| चलिए छोड़िये, आदमी की ज़िन्दगी में बचपन, युवावस्था और अंत में वृद्धावस्था जैसे भाग आते हैं| कैसे ये ज़िन्दगी एक भाग से दूसरे भाग में प्रवेश करती है, कुछ पता ही नहीं चलता| कल मेरे सामने ऐसी ही दो घटनाएं आईं जिसने मुझे इस ज़िन्दगी पर ये लेख लिखने को मजबूर कर दिया |

मैं और मेरे कुछ दोस्त एक दोपहर क्रिकेट खेलने गए| वहाँ एक बच्चे, जिसकी उम्र यही कुछ 7-8 साल रही होगी, पर मेरी नज़र गयी| जब भी बॉल मैदान से बाहर जाती तो वह बच्चा बड़े उत्साह के साथ भागता और बॉल लेकर आता| हालाँकि उसका हमारे खेल से कोई सरोकार नहीं था फिर भी हर बार वो ऐसा ही करता|

फिर हमने सोचा कि बच्चा थक जायेगा तो मैदान के बाहर भी दो खिलाड़ी लगा दिए| लेकिन इसके बाद भी वो बच्चा गेंद के पीछे भागता और हमारे दोस्तों से पहले ही गेंद पकड़ लेता| इस बच्चे को देखकर हम अपने बचपन की वो स्फूर्ति, चंचलता और बेफ़िक्री को याद करने पर विवश हो गए|

एक अन्य घटना इससे कुछ अलग पहलू को दर्शाती है| एक रात मैं कनॉट मार्केट में अपने मोबाइल का रीचार्ज करवाने गया| वहाँ मैंने देखा कि एक 60-65 साल का वृद्ध व्यक्ति, चेहरे पर झुर्रियाँ, ज़िन्दगी से कुछ थका हुआ सा प्रतीत हो रहा था| उस बूढ़े आदमी ने वहाँ टेलीफ़ोन बूथ से किसी से बात की थी| दुकानदार ने उसे कॉल का बिल बताया तो वह थोड़ा चिढ़ सा गया और दुकानदार से बहस करने लगा| वो कहने लगा कि उसने केवल दो कॉल्स ही किये थे जबकि दुकानदार के मुताबिक फोन से तीन कॉल हुए थे| अंत में कुछ गहमा-गहमी के पश्चात दुकानदार और उस बूढ़े आदमी में सहमति हो गयी| पर जाते-जाते दुकानदार ने उससे कहा कि आप इतनी छोटी सी बात पर कृपया उत्तेजित ना हुआ करें| मुझे मालूम है आप अपने घर की चिंता में डूबे हैं परन्तु अपनी सेहत और उम्र का भी ख्याल रखें| उनकी बातों से मुझे एहसास हुआ कि शायद वो बूढ़ा व्यक्ति भी किसी दिन उस उत्साही बच्चे की तरह रहा होगा| हो सकता है उसने सारी ज़िन्दगी अपने घर-परिवार के विकास और समृद्धि में लगा दी हो, पर फिर भी आज ज़िन्दगी के इन आखिरी दिनों में वो इतना अकेला और परेशान है| क्या कभी उस बच्चे ने ऐसा सोचा होगा कि उसकी ज़िन्दगी में भी ऐसा पड़ाव आ सकता है| ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो ज़िन्दगी को पहेली बनाये रखते हैं| शायद ऐसी पहेली जो कभी किसी से सुलझ नहीं सकती |

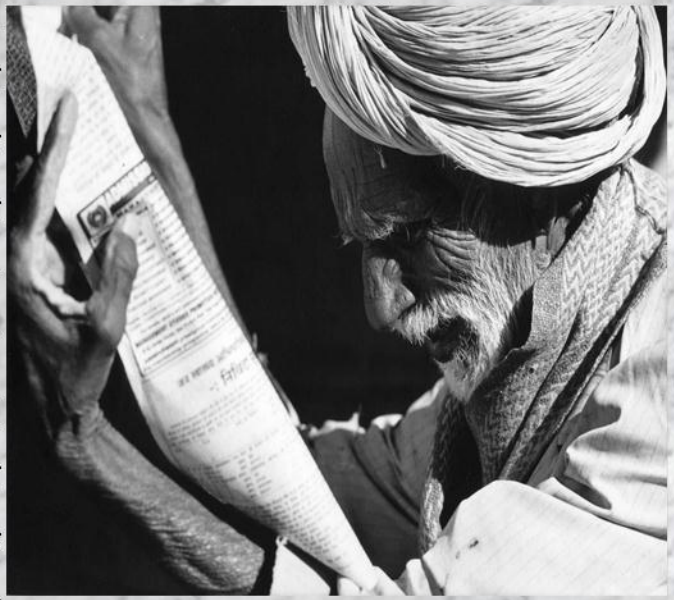

- विक्रांत शर्मा

वाजिब हो सब तब भी सवाल उठाना जानते हैं,
करनी हो पहल तो कदम पीछे खींचना जानते हैं ||

वक़्त और काबिलियत हों साथ बावजूद इसके,
आग लगने पर कुआँ खोदना जानते हैं ||

शौकों को ज़रूरत का जामा पहनाना जानते हैं,
अपनी कमियों को बखूबी छिपाना जानते हैं ||

जो वक़्त ने बचाकर रखा है हमारे लिए ,
उसे भूलकर बीते पर आंसू बहाना जानते हैं ||

दिन रात एक कर देते हैं जिस मुक़ाम के लिए ,
न मिले तो क्या तब भी मुस्कराना जानते हैं ?

काश हम सब भी यह जान पाते ,
सबकुछ जानकर भी हम कुछ नहीं जानते हैं ||

- पुरुजित सिंह चौहान

शोध यात्रा : एक सफ़र सच्चाई की ओर

- अंजुम धमीजा

अपनी चरम सीमा पर पहुंची ठंड और उसके साथ-साथ सेमेस्टर शुरुआत का उत्साह, कुछ ऐसे ही शुरुआत होती है हम सबके लिए जनवरी की | सेंटीसेम होने के कारण मेरे लिए ये जनवरी और भी ख़ास थी | मगर इस कैम्पस की चहल-पहल के बीच मुझे एक और चीज़ का इन्तेज़ार था | मुझे इन्तेज़ार था एक यात्रा का, शोध यात्रा का | अब आप कहेंगे ये शोध यात्रा क्या है? तो चलिए आपका इससे परिचय कराती हूँ |

इस वर्ष, 12-17 जनवरी के दौरान लगभग 70 लोगों का एक जत्था निकला था मणिपुर के सफर पर | इस जत्थे में बहुत से अलग-अलग रंग थे | 15-65 वर्षीय लोगों के इस समूह में छात्र-छात्राएँ , किसान, वैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता, निगम के कर्मचारी इत्यादि हर क्षेत्र के लोग थे | व्यक्तिगत रूप से देखें तो इस यात्रा से जुड़ने का हर किसी का अलग ही कारण था मगर पूरे समूह का एकत्रित रूप से उद्देश्य एक ही था| वह था प्राकृतिक कठिनाईओं के बावजूद वहाँ के लोगों में समाई सृजनात्मकता ,कल्पनाशक्ति एवं नवरचना की चाह को पहचानना, उसको सम्मानित करना तथा उससे प्रेरणा लेना | मणिपुर के चुराचांदपुर जिले का नाम देश के सबसे पिछड़े जिलों में लिया जाता है, परन्तु वहाँ की प्रगतिशील सोच एकदम विस्मित कर देती है | हर पल आपको नयी प्रेरणा देते ये लोग 6 दिन में न जाने कितने ही जीवन मूल्यों को झकझोर गए | उनमें से कुछ को आपके साथ बांटना चाहूंगी |

आत्मनिर्भरता तथा निरंतरता

यात्रा की पहली रात एक अनाथालय में रहने का इंतज़ाम किया गया | राज्य के आंतरिक और बाहरी प्रतिद्वन्द्व के चलते अनाथ हुए इन बच्चों को एक खुशहाल व सम्पूर्ण जीवन देने की सोच से इस अनाथालय की शुरुआत की गयी थी | परन्तु पारंपरिक अनाथालयों की तरह ये अनिश्चित दान से नहीं बल्कि स्वाभिमान से चलता है | यहाँ बच्चे व प्रभारी मिलकर अदरक तथा सूरजमुखी के बीजों की खेती करते हैं और उससे हुए मुनाफे पर ही दिन-प्रतिदिन का खर्चा चलता है | दुनिया के हर विश्वविद्यालय और हर उद्योग की सभाओं में निरंतरता की बातें होती हैं | मगर ऐसा जीता-जागता उदाहरण कठिनाइयों की सीमा को तोड़ते ये बच्चे ही क्यूँ पेश कर पाए?

संतोष — जीवन का सार

एक गांव से गुज़रते हुए हमारी भेंट हुई द्वितीय विश्वयुद्ध के एक सिपाही से | 91 वर्षीय इस सिपाही ने बताया कि उस समय में विरोधी सेना के समर्पण के साक्षी होने का सौभाग्य इन्हें मिला | उन्हें 7-8 वर्ष ही हुए थे सेना में कि उनको अपने बीमार पिता के रख-रखाव के लिए सेना छोड़ कर गांव वापस आने का आदेश आ गया | इस कारण से आज उनके पास इस उम्र में सेवानिवृत्ति वेतन का कोई स्त्रोत नहीं है | स्वतंत्रता के समय फ़ौज में रहे हर जवान को एक अलग से निवृत्ति वेतन कार्ड दिया गया था लेकिन वो भी गांव में ही किसी ने चुरा लिया | पता होते हुए भी उन्होंने इस बात का विरोध नहीं किया क्योंकि वो अपनी जीविका के लिए गांव का बंटवारा बिलकुल नहीं चाहते थे | आज इस ढलती उम्र में उनके पास कोई काम करने की शक्ति भी नहीं है | उनके कमाई के साधन के बारे में पूछने पर उनका जवाब था कि उन्हें भी नहीं पता आय कहाँ से होती है, बस ईश्वर देता है | ऐसे न जाने कितने ही लोग वहाँ ईश्वर के सहारे जीवनयापन कर रहे हैं फिर भी हम जैसे लोगों की आवभगत में कोई कमी नहीं छोड़ते | किसी गांव में 40 वर्ष से कोई आया ही नहीं है तो किसी गांव में अपने स्कूल के सपनों को न जाने कितनी पीढ़ियाँ आँखों में संजोए बैठी हैं, लेकिन इसके बावजूद कोई शिकायत नहीं करता | दिन-प्रतिदिन अपने सीमित साधनों से ही जीवन में नवीनता लाने को प्रयासरत हैं ये लोग | क्या हम अपने जीवन की तुलना कर सकतें हैं इनसे?

प्रयोगात्मक जज़्बा

अपने बचपन से हम लोग यही सीखते आये हैं कि सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कार्य के बीच के सेतु को अनुसन्धान कहा जाता है | मगर हम में से बहुत कम लोग इस सेतु को पार कर पाए हैं या यूँ कहें कि अपने पढ़े को कार्यान्वित कर पाए हैं | शायद हम ये भूल जाते हैं कि पढ़ाई के साथ-साथ ज़रूरत है एक जज़्बे की जिसकी कई मिसालें मुझे यहाँ देखने को मिलीं – एक औरत जो अपने पूर्वजों से समेटे हुए ज्ञान का प्रयोग कर अपने पति का कैंसर दूर कर पायी, एक सरपंच जो बाँस से तैयार की गयी एक खाद से अपने खेत की पैदावार को चौगुना कर पाया, एक व्यक्ति जो लोगों के लिए एक साथ चावल उबालने वाला कूकर बना चुका है | हमने कभी अपनी हॉस्टल की छत से बहते पानी की शिकायत नहीं की होगी, लेकिन लोग अपनी छत पे जमी ओस का पानी भी इक्कठा करके पौधों में डालने को इस्तेमाल करते हैं | रोज़ के खाने से बच्चे चावल को फेंकने के बजाय, उन्हें सुखाकर बुरे वक्त में पशुओं के चारे के लिए इस्तेमाल करते हैं | हमें तो अनुमान भी नहीं की हमारी मेस में रोज़ाना कितना खाना बचता है और उसका क्या किया जाता है?

इतना कुछ सीखने को मिला, लेकिन साथ में एक अपील भी आई जिसे मैं आप सबके समक्ष रखना चाहूंगी | वहाँ के लोगों के शब्दों में, “आप यहाँ आए, हमें बहुत अच्छा लगा | हमने अपनी क्षमता के अनुसार आपको हर सुविधा देने का प्रयास किया | मगर हमारे बच्चे जब आपके क्षेत्र में जाते हैं तो उन्हें परदेसी क्यूँ माना जाता है? हम भी उसी भारत के नागरिक हैं | क्या आप इस प्रवृत्ति को बदलने के लिए कुछ कर सकते हैं ?”

ये सवाल आप सबके लिए है | जवाब ज़रूर ढूँढना...उन्हें इन्तेज़ार है !!!

पेटूलाल कुर्सीतोड़

- रवि गुप्ता

पेटूलाल कुर्सीतोड़ कोई आम आदमी नहीं हैं| वे तो एक खास आदमी हैं और उनकी इसी खासियत ने उन्हें संगठन का गणमान्य व्यक्ति बना दिया है| संगठन के हित में और संगठन की गरीब व साहब की मारी निरीह मज़दूर जनता के हित में जब-जब आमरण अनशन की बात होती है पेटूलाल कुर्सीतोड़ को ही याद किया जाता है| उन्होंने परिसर के मुख्य द्वार के सामने एक दुकान खोली है| सामने एक बोर्ड लगा है, जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा है 'आमरण अनशन के लिये चौबीस घंटे उपलब्ध पेटूलाल कुर्सीतोड़'|

जब से मैंने संस्था में प्रवेश किया है पेटूलालजी पाँच बार आमरण अनशन पर बैठ चुके हैं| मैं हर बार सोचता था कि पेटूलाल अब टपके तब टपके और शहीदों की श्रेणी में नाम दर्ज कराने के लिए शायद मुझे कब्रिस्तान जाने का अवसर मिले| किंतु भईयाजी हर बार मुझे ही मुँह की खानी पड़ी है| वे टपकते ही नहीं| मैं सोचता कि संस्था डर गई होगी और पेटू एजेंडे की सभी बातें संस्था ने मान ली होंगी| किंतु हर बार पता चलता कि संस्था ने पेटू की एक भी बात नहीं मानी और उन्होंने अनशन तोड़ दिया है| खबर होती, पेटू पुलिस के घेरे में, संतरियों ने संतरे का रस पिलवाया और उन्होंने संस्था-अधिकारी से हाथ मिलाया| और बस, वे शान से अपनी दुकान वापस आ जाते|

मुझे समझ में नहीं आता कि कमबख्त ये कैसा अनशन है| अनशन का मतलब तो यह है कि जब तक माँगें न मानी जायें, भूखे रहो, प्यासे रहो और मर जाओ, गरीब कर्मचारियों के लिये मर जाओ, अपने आपको शहीद कर दो| आखिर मरना तो सभी को है, अनशन से मरोगे तो अखबार और टीवी चैनलों में अंतिम समय तक बने तो रहोगे, साथ ही औलाद की पूछ-परख भी होने लगेगी| परंतु पेटूलाल की तो बात ही निराली है, जब भी आमरण की भट्टी से तपकर निकलते हैं चेहरा टमाटर की तरह लाल हो जाता है| भौहें और मूँछें महाराणा प्रताप की मूँछों और भौहों की तरह खिल जातीं हैं|

एक दिन मैंने पूछा, "पेटू काका! आप जिसके विरोध में अनशन पर बैठते हैं उसी के साथ हाथ मिलाते हुए फोटो खिचवाते हैं, हँस-हँस कर बातें करते हैं, यह क्या माजरा है?"

पेटू ने इधर-उधर देखा और धीरे से कान में बोले, "बेटाजी मैं रिमोट से संचालित होता हूँ, जिसके विरोध में अनशन पर बैठता हूँ, उसकी सहमति और आदेश से ही बैठता हूँ| कब तक अनशन पर बैठना है, कब पुलिस गिरफ्तार करेगी, कब संतरे का रस पीना है और कौन पिलायेगा, सब पूर्व निर्धारित कार्यक्रम होता है| बड़ा जोखिम का काम है| कभी-कभी तो दम निकलने की नौबत आ जाती है| मजदूर माँगों के समर्थन में नारे लगाते रहते हैं, फोटोग्राफर और पत्रकार घेरे रहते हैं, ऐसे में कभी-कभी आयोजक महोदय व्यस्तताओं के चलते रिमोट दबाना भूल जाते हैं, तब लगता है बुरे फँसे, कहीं जान ना गवानी पड़े| तब तो पुलिस वालों को कातर नज़रों से देखता हूँ - "हे खाकी वर्दी वालों! आगे बढ़ो, पुलिस की लारी में बैठाओ और जेल की यात्रा कराओ" | पुलिस के अफसर मुंडी हिला देते हैं, कहते हैं, "ऊपर से कोई आदेश नहीं आया है अब तक|" मैं ऊपर वालों को मन ही मन गाली देता हूँ, "साले इस आयोजक को कोई चिंता नहीं है, ना अंगूर का रस पिलवा रहा है, ना ही गिरफ्तार करवा रहा है, या-खुदा मदद कर|" ऐसा कहकर वे मुस्कुराने लगे|

मैंने पुछा, "क्या लाभ है ऐसे अनशन का?"

तब वे मूँछों पर ताव देते हुए कहने लगे, "आमरण अनशन के लिए में लाखों में सौदा करता हूँ और साथ ही मेरे नेतृत्व के गुण भी विकसित हो जाते हैं|"

जब से लोगों को इस तरह के आमरण अनशन के बारे में पता लगा है, गावों में कई साइन बोर्ड लग गये हैं| कई इंस्टीट्यूशन्स ट्रेनिंग देने के लिये तैयारी कर रहे हैं| अब मैं भी कुछ ऐसा ही करियर बनाने की सोच रहा हूँ, देखते हैं कब से चालू हो रही है ये कक्षाएँ|

एक चिट्ठी सब कह जाती है

न कागज़ के पन्ने बस,
न कलम की स्याही ये,
निकल पड़ी अपनी मंजिल को,
बड़ी राहों की राही ये,
मामूली लिफ़ाफ़ा नहीं,
ये धड़कता मन है,
किसी बेटे ने, किसी प्रेमी ने ,
भेजा बेमोल धन है !
भूली बिसरी बातों की नदिया,
बस आँखों से बह जाती है,
सच, एक चिट्ठी सब कह जाती है !

वो होली दिवाली की खुशियाँ,
न्यौता भैया की शादी का,
दर्द की चीखों में घुटकर मरता,
स्वर्गवास प्यारी दादी का,
कॉलेज से प्रमाण पत्र,
वो दुलारी माँ से उपहार,
कुछ शब्दों में झलकता,
अपनों का प्यार!
भावों के तीखे तीरों को,
खुलकर बस सह जाती है,
सच, एक चिट्ठी सब कह जाती है!

- अर्चित अग्रवाल

पी.एस. डायरीज़

पी.एस. डायरीज़

यह कहानी है 102 अनिशा मेडोज़ की जो कि बैंगलोर के कोरमंगला इलाके में स्थित है । काफी दिनों की ऑनलाइन खोज के बाद यह घर हमने चुना । बैंगलोर के सबसे समृद्ध इलाके में 3 कमरों के पूर्ण सुसज्जित घर के इस सौदे से हम काफी संतुष्ट और खुश थे ।पर वहाँ पहुँचते ही सारी सच्चाई सामने आ गयी । सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि अभी सिर्फ एक महीना पहले ही यहाँ वैश्यावृति का धंधा चल रहा था जिसके चलते यहाँ पुलिस के छापे पड़े थे । ऐसी वारदात को हमसे छुपाकर कम पैसों में इस घर का सौदा करके जो खिलवाड़ और धोखाधड़ी हमसे की गयी उससे हम संभल ही रहे थे कि जल्द ही एक और झटका लगा | एक पूरे 5 बी.एच.के. घर को बिट्स के ही दो दलों को अलग-अलग से 2 बी.एच.के. व 3 बी.एच.के. बताकर यह सौदा कर दिया गया था | परेशानियाँ यहीं खत्म नहीं हुईं | एक बार कुछ लोग घर में ज़बरदस्ती घुस आये और कहने लगे कि इस कमरे का बिस्तर उनका है और उन्हें वापिस चाहिए | और तो और घर की मकान मालकिन भी कुछ कम नहीं थीं | वेबसाइट पर घर की फोटो डालने के नाम पर लड़कियों के घर में कभी भी फोटोग्राफर को ले आती थीं | एक दिन उन्होंने हॉल के चारों कोनों में एक जैसी कुछ तस्वीरें लगा दीं ; हम वैसे भी उस दौरान टी.वी. पर हॉरर शो 'फियर फाइल्स' देखा करते थे तो मन में बुरे-बुरे विचार आने लगे की कहीं कुछ जादू टोना तो नहीं कर रही ये हम पर | ऐसी कई छोटी-मोटी घटनाओं के बीच आखिरकार पी.एस. 2 के वो 6 महीने गुज़र गए और अंततः हम सब सही सलामत घर वापस आ गये | आज भले ही ये किस्सा याद करके हम हँस लेते हैं परन्तु जिन परिस्थितियों में हम रहे वो इससे कहीं बद्तर हो सकती थीं | आशा है आने वाले समय में यदि पी.एस. 2 पर आप में से कोई बैंगलोर जायेगा तो इस वाकये को याद करके थोड़ा सचेत अवश्य रहेगा |

— अनुजा गुप्ता

बिट्सियन लाइफ़ में PS 1 का क्या महत्व है, इससे तो आप भली-भांति परिचित होंगे ही, और कभी-कभी यही PS हमें ऐसी मनोरम यादें दे जाता है जो सम्पूर्ण ज़िन्दगी हमें याद रहती हैं । वैसे तो PS का मतलब प्रैक्टिस स्कूल अर्थात् कंपनी अथवा इंस्टिट्यूट में 2 महीने की ट्रेनिंग होता है, पर काम के साथ-साथ यहाँ की भरपूर मस्ती के भी किस्से खूब मशहूर हैं। ऐसा ही एक किस्सा गोवा में PS 1 के लिए गए कुछ छात्रों का है जो कैम्पस पर काफ़ी मशहूर रहा है |

मई 2012 के ही दिनों की बात है । एक सप्ताहांत पर कुछ बिट्सियन्स ने ओल्ड गोवा घूमने का मन बनाया और योजनानुसार सुबह ही वे कैम्पस से बस स्टॉप की ओर चल पड़े | परन्तु उनके कुछ अन्य साथी जो थोड़ी देर से चले थे, उनकी बस छूट गयी | देर तक इंतज़ार करने के बावजूद जब कोई बस नहीं आई, तब उन्होंने लिफ्ट मांगना प्रारंभ किया और किस्मत से एक गाड़ी उनके पास आकर रुक गयी | एक 40-45 वर्ष का आदमी गाड़ी चला रहा था, बातचीत करने पर पता चला कि वह गोवा सरकार का कोई बड़ा अधिकारी है | वह छात्रों को लंच के लिए वास्को के सुप्रसिद्ध पांच-सितारा होटल HQ ले गया जहां उसने उन्हें लज़ीज़ भोजन तो कराया ही, साथ ही साथ शान से भोजन करने के कई टिप्स भी दिए | इस आलीशान भोजन के बाद वह उस घर में ले गया जिसमें "रा-वन" फिल्म की शूटिंग हुई थी | अंत में पूरा ओल्ड गोवा अपनी गाड़ी में घुमाने के बाद वह उन्हें कैम्पस तक भी छोड़ने आया | सुनने में तो यह भी आया कि उसने उन लोगों को अपना फोन नंबर दिया और अगली बार गोवा आने पर अपने फार्म हाउस में रुकने का निमंत्रण भी दे डाला | जब उन छात्रों ने लौटने पर यह कहानी सुनाई, तो कुछ तो अपनी किस्मत को कोसने लगे तो कुछ ने तो मानने से ही इनकार कर दिया |

खैर यह सिलसिला यहीं नहीं थमा | अगले वीकेंड उस व्यक्ति ने खुद उन छात्रों को अपने घर लंच पर बुलाया और रात को वह उन्हें गोवा के सबसे मशहूर और महँगे डिस्को TITO'S ले गया जहाँ अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके सबका निःशुल्क प्रवेश कराया | हद तो तब हो गयी जब PS से लौटने पर खबर मिली कि गोवा से वापस जाते समय उसी व्यक्ति ने उनमें से एक छात्र को एक अति-बहुमूल्य मोबाइल सेट गिफ्ट किया | बाकी बिट्सियन्स ने इस कहानी को अलग-अलग तरह से स्वीकार किया | कुछ मज़ाक में बोले कि इस फोन के बदले कहीं ये लोग किडनी तो नहीं बेच आये, तो कुछ ईर्ष्या के कारण जलते ही रह गए | कुछ लोग ईश्वर से दुआ करने लगे कि उन्हें भी ऐसा ही कोई देवता लिफ्ट दे दे कभी | अब यह कहानी पूरी तरह सत्य है या नहीं, यह तो बस वही छात्र बता सकते हैं, पर PS का यह अद्भुत किस्सा कई सालों तक लोगों की जुबां पर रहेगा |

— श्रेय कपूर

आज भीगते हैं चल

वो बारिश की पहली बूंदों का धरती को चूमना,
वो हर साँस में मिट्टी की सौंधी खुशबू को सूँघना,
वो पत्तों पर बारिश की टिपटिप को सुनना,
आसमान से गिरते भीगे सपनों को चुनना,
खुशियों से आज, आ सींचते हैं ये पल
आ हाथ थाम मेरा, आज भीगते हैं चल ||

उस प्यासी रूह का तर हो जाना,
उन भीगे लम्हों में बेखबर हो जाना,
वो सावन में साजन की याद का सता जाना,
उन बरसती घटाओं में बहते आँसू छिपा जाना,
खुशियों से आज, आ सींचते हैं ये पल
आ हाथ थाम मेरा, आज भीगते हैं चल ||

वो बचपन में कागज़ की कश्ती तैराना,
वो स्कूल से दोस्तों संग भीगते हुए आना,
गीले आँगन में नंगे पैरों से उछल-कूद मचाना,
कुल्हड़ की चाय संग गर्मा-गरम पकोड़े खाना,
खुशियों से आज, आ सींचते हैं ये पल
आ हाथ थाम मेरा, आज भीगते हैं चल ||

सूरज की किरणों का बूंदों को छूकर गुज़र जाना,
फिर सातों रंगों का आसमान पर यूँ बिखर जाना,
भीगते जंगल में मोर का अपने पंख फैलाना,
चिरैया का सावन के मधुर गीत गाना,
रिमझिम फुहारों को फूलों पर बरसाना,
फूलों का खिलकर फिर बगिया महकाना,

बेरंग सी ज़िन्दगी में कुछ रंग भर के चल,
बेअसर उस पुकार में उमंग भर ले चल,
बरसती घटाओं को बाहों में भर के चल,
खुशियों से हर पल आज सींचते हुए चल,
आ हाथ थाम मेरा, आज भीगते हैं चल ||

- ईशान श्रीवास्तव

पिलानी की बारिश

कस्बे से दिखने वाले "बिट्स" के दरवाजे की आस है,
इतवार को मेस में मिलने वाली मिठाई की मिठास है,
शिवजी के अँधेरे का राज़ है,
बॉसम के मौसम की कड़वास है,
पिलानी की बारिश|

प्रथम वर्ष में I.P.C. का संसार है,
द्वितीय वर्ष में ट्रिप का बढ़ता प्यार है,
तृतीय वर्ष में सी.डी.सी. और
चतुर्थ वर्ष में सरला की बहार है,
पिलानी की बारिश||

ट्यूट के भूरे लिफाफे के खालीपन का लिबास है,
पुराने पेपर्स से प्रश्नों की गुंजाइश का कयास है,
लेक्चर कैंसल होने की खुशी का इंतज़ार है,
एवरेज कम होने की चाहत का इज़हार है,
पिलानी की बारिश|

PCA में प्रकाश की कविताओं की शीतल बौछार है,
"जीमण" की बाटी का घर जैसा आकार है,
"नेपथ्य" के पोहे और "संगम" के मोमोज़ का स्वाद है,
पिलानी की बारिश|

कृष्णा रेडी की मैगी और पापड़ी चाट है,
कनॉट की बिरयानी और MNB का स्वाद है,
बर्थडे पर मिलने वाला केक और साथ में लात है,
टेम्पल का वातावरण और सीढ़ियों पर मिलने वाला साथ है,
पिलानी की बारिश|

ओएसिस में DU के पांच दिन का डेरा है,
इस वीराने में सेलिब्रिटीज़ का फेरा है,
फेस्ट पे लज़ीज़ स्टाल्स की खबर है,
मोहना की ठुमकती वो लचकीली कमर है,
पिलानी की बारिश|

झुलसती गर्मी की असली राहत है,
पँखों में तरसते बिट्सियंस की चाहत है,
कागज़ की नाव तैराते उस बचपन की आहट है,
पिलानी की बारिश|

बिट्स की संस्कृति का 'रंग',
एक शाश्वत 'संग'
बिट्स का अमिट 'ढंग' है,
पिलानी की बारिश|

-राजेश विजयवर्गीय

आज़ादी ??
क्यों मज़ाक करते हो !!!

'क्या आज़ादी तीन थके हुए रंगों का नाम है, जिन्हें एक पहिया ढोता है? या इसका कोई ख़ास मतलब होता है |', धूमिल की ये पंक्तियाँ आज भी मेरे ज़हन में कई सवाल छोड़ जाती हैं | आज़ादी... हम आज़ाद हैं, ये कहने पर कुछ कहेंगे – मज़ाक (ज़ोर देते हुए) कर रहे हो?? सच में कई बार मज़ाक ही लगता है| "...15 अगस्त", एक ऐसा दिन जब हर हिन्दुस्तानी को एहसास होता है कि वो आज़ाद है... हफ्ते-दस दिन पहले से टीवी-रेडियो पर आज़ादी के जश्न के प्रोग्राम शुरू हो जाते हैं... बड़ी-बड़ी बातें बड़े-बड़े वादे... फिर अगले दिन से वही नौकरों वाली हरकतें... वही गुलामी वाले फतवे... ऐसे में काहे कहें अपने को आज़ाद??(:/) जिस देश में लड़कियाँ अपनी मर्ज़ी से आ-जा नहीं सकतीं... ये तो छोड़िये जनाब, लड़कियों पर पाबन्दी लगाने वाली पंचायत का समर्थन लड़कियाँ ही कर रही हों, ऐसी गुलाम मानसिकता के बीच कैसे कहें खुद को आज़ाद?? जींस पहनकर बाहर निकलने पर लड़कियों पर तेजाब फेंकने की बातें करने वाले आतंकी छुट्टे सांड की तरह घूम रहें हो तो कैसे कहें खुद को आज़ाद?? अजी जिस देश की राजधानी तक में सिर्फ दो महिलाएँ (दिल्ली की माता शीला दीक्षित और देश की माता सोनिया गाँधी (:P)) ही हैं सुरक्षित तो कैसे कहें खुद को आज़ाद?? जब लाशों पर भी राजनेता राजनीति करते हैं और फिर भी सब चुप रह कर तमाशा देखते हैं ... तो कैसे कहें खुद को आज़ाद?? जिस देश में एक तरफ लाखों टन अनाज पड़े-पड़े सड़ जाता है, वहीँ दूसरी तरफ लोग भूखे मर रहे हैं, किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हैं, तो उसे कैसे कहें आज़ाद?? चंद कौड़ियों की चोरी के इलज़ाम में जहाँ एक निर्दोष आदमी 10 साल की जेल काट रहा हो और अरबों डॉलर डकारने के बाद भी जहाँ नेता खुले आम घूम रहे हों... कैसे कहें उसे आज़ाद?? इतना ही नहीं है ज़नाब, मासूम युवती के रेप व निर्मम हत्या के ज़िम्मेदार दैत्य पाँच सितारे में बैठ मज़े से बिरयानी खाते हों जहाँ, उसे कैसे कहें आज़ाद?? जहाँ युवाओं की सोच को दबाने में कानून दे रहा हो भ्रष्टाचारियों का साथ और एक बुज़ुर्ग के हौंसलों पर छोड़ दिया हो देश के भविष्य का भार, तो कैसे कहें खुद को आज़ाद?? जहाँ आज़ाद ख्यालों को ज़ाहिर करने पर लोग आज़ाद नहीं रह पाते और देश तोड़ने की बातें करने वाले लोग मस्त घूमते हों, उसे कैसे कहें...?? यहाँ के पत्रकार मरे लोगों की संख्या के हिसाब से खबर को तोलते हैं, यहाँ लड़की पैदा होने पर पढ़े-लिखे लोगों में भी मातम छा जाता है ... क्या अब भी कहोगे खुद को आज़ाद?? यहाँ आज भी जाति-धर्म के नाम पर लोग बंट जाते हैं और फिर भी हम खुद को *'सो-कॉल' सेक्यूलर* कहते हैं (huh!..) ..आज़ाद?? (R U kiddin me!?) खैर इस तरह की आज़ादी की बात करने निकला तो कई पन्ने भर जायेंगे लेकिन बात शायद ख़त्म न हो...

कैसी आज़ादी? कैसा देशप्रेम? सब 15 अगस्त जैसे दिनों में जाग जातें है और फिर सो जातें है... बात तो ऐसी करते हैं सब कि बस आज ही देश के लिए सरहद पर लड़ने चले जायेंगे... और शहीद हो जायेंगे... कुछ और तो छोड़िये फिर वोट देने तक नहीं जाते... और फिर कहीं मिले ना मिले, सिस्टम को गाली देते हर गली-नुक्कड़ पर ज़रुर मिल जाते हैं... क्यों? वंदे मातरम को राष्ट्र गीत मानते हैं...पर राष्ट्र की माँ-बहनों की इज्ज़त लुटने पर तमाशा देखते हैं...क्यों?? क्यों हम असली आज़ादी पाने के लिए कुछ करने को तैयार नहीं हैं? और जो कर रहा है उसका मज़ाक बनाने में हम सबसे आगे रहते हैं... क्यों? ना अपनी कुछ ज़िम्मेदारी समझते हैं और ना ही दूसरों को उनकी ज़िम्मेदारी निभाने देते हैं... क्या हमें ज़रुरत नहीं है कि हम देश के लिए कुछ करें? क्या हममें इतना भी दम नहीं कि जिन लोगों ने आज़ादी के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी उनके बलिदान का मोल रख पाएँ और इस देश को हर तरह से आज़ाद बनाकर दिखाएँ?? लेकिन शायद हम कुछ करना ही नहीं चाहते...या कुछ और...पता नहीं लेकिन इस बात पर ये दो पंक्तियाँ याद आ रहीं हैं-

"सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नाशाद है,
दिल पे रखकर हाथ कहिए क्या देश आज़ाद है??"

- रवि गुप्ता

जीतने की ललक

– सौरभ बियानी

एक मुकाम आता है,

जब सिर्फ हार नज़र आती है |

खुली आँखों से भी,

रोशनी नज़र ना आती है |

दिल में तब उठता है सवाल,

क्या जीत होगी मेरी कभी?

अंधकार कब ये ढलेगा,

क्या मेरा जीवन जगमग होगा कभी?

तभी मन के किसी कोने में छुपी,

जीतने की वो ललक

मन ही मन हुँकार लगाती है,

उठता है ज्वार ऐसा कि

नए जूनून के साथ वे आशाएँ,

फिर जीवंत हो जाती हैं|

फिर चाहे हार हो कितनी भी बड़ी,

हमीं से हार जाती है |

मन की गहराइयों में समाई

जीतने के वो ललक ही तो हमें,

फिर शिखर तक ले जाती है |

....

बिट्स पिलानी - समाज के हित में !!!

- आकृति, प्रणय, यशवर्धन, रवि

सुख-शांति से रहने के लिए और सरलता से जीवन-यापन करने के लिए यह समाज़ एक बेहतर जगह बन सके, इस विचार को फलीभूत करने के लिए एन.एस.एस., निर्माण, और ऐसे ही कई अन्य संगठनों से जुड़कर बिट्सियन्स ने अपने प्रयासों से समाज बदलने का बीड़ा उठाया है| आइये जानते हैं बिट्स के इन दो प्रमुख प्रयासों 'निर्माण' और 'एन.एस.एस.' के बारे में –

"कोई भी कार्य आरम्भ करने से पूर्व स्वयं से तीन प्रश्न करें- मैं यह क्यों कर रहा हूँ?? इसका परिणाम क्या हो सकता है?? और क्या मैं सफल हो पाऊंगा??" चाणक्य का यह कथन खुद में नितांत सत्य है | सन् 2005 में बिट्स के चार छात्रों ने जब 'माई इंडिया' नामक सेवासंस्था रुपी बीज को बोया था तब उनके मन-मस्तिष्क में भी कुछ ऐसे ही विचार हिलोरे खा रहे होंगे| घोर संघर्ष और अनेक मुश्किलों के बाद 'माई इंडिया' सन् 2007 में लाभ-निरपेक्ष संस्था की श्रेणी में *"निर्माण"* के नाम से सूचित हुआ और आज निर्माण 7 सालों से 5 राज्यों में 700 से भी ज्यादा स्वयंसेवकों के साथ विकसित समाज के निर्माण में जुटा हुआ है| 'स्वामी विवेकानंद' के आदर्शों का पालन करने वाली इस संस्था के प्रतीक चिन्ह में 4 लोगों को आपस में हाथ बांधकर घेरा बनाए दर्शाया गया है जो एकता को दर्शाता है| अभाव-रहित, ज्ञान-चालित और आर्थिकरूप से सशक्त समाज की रचना इस संस्था का उद्देश्य है| पिलानी में 110 से अधिक लोग निर्माण से जुड़े हुए हैं| "निर्माण" निम्न क्षेत्रों में काम करता है -

1. **शिक्षा** - इसके अंतर्गत 6 योजनाओं का क्रियान्वयन जारी है:-

- **शिक्षा की ओर (SKO)** - इस योजना के माध्यम से ऐसे बच्चों को पढ़ाया जाता है जो कभी स्कूल नहीं गए| यह पिलानी की नटबस्ती और आस-पास के इलाके के बच्चों को शिक्षित करने की ओर अग्रसर है|
- **ज्ञानबोध (GB)** - इसके अंतर्गत बच्चों के अभिभावकों को पढ़ाई का महत्व बताते हुए बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया जाता है तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान दिया जाता है |
- **दिशा** - इसके द्वारा लोगों को जीविका सम्बन्धी जानकारियाँ दी जाती हैं जिससे वे अपनी रूचि अनुसार अपने आजीविका के साधन का चयन कर सकें|

- **स्कूल अडॉप्शन प्रोग्राम (SAP)** - इस योजना के तहत हर सरकारी स्कूल में मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास होता है|
- **विद्या हेल्पलाइन** - टेली-काउंसलिंग, कार्यशालाओं और कक्षा-प्रशिक्षण के माध्यम से यह बच्चों को शैक्षणिक सलाह, छात्रवृत्ति आदि की जानकारी देती रहती है |
- **उत्कर्ष व निर्माण स्कॉलरशिप प्रोग्राम (NSP)** - जरूरतमंद और मेधावी छात्र इन योजनाओं के माध्यम से छात्रवृत्ति का लाभ उठा सकते हैं|

2. आजीविका के प्रयास - महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए निर्माण ने कई स्वयं-सेवी दल बनाए हैं| ये स्वयं-सेवी दल गरीब महिलाओं को उनकी रूचि के अनुसार छोटे-मोटे घरेलू कार्यों (जैसे सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, आदि) में प्रशिक्षित करते हैं, फिर उनके द्वारा बनाए गए उत्पादों को बाज़ार में बिक्री के लिए उतारा जाता है| इसके माध्यम से महिलाएँ न केवल मिलजुल कर काम करना सीखती हैं बल्कि उनमें व्यापार करने और धन संचय करने का हुनर भी आ जाता है| इस समय पिलानी के पास ही 'खेड़ला' और 'बास' में ये स्वयं-सेवी दल कार्यरत हैं|

3. सामुदायिक सहभागिता (participative community development) -

किसी समस्या का निवारण बताने और अपनाने में बहुत फ़र्क होता है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए निर्माण गाँव-गाँव जाकर समस्याओं के निवारण करने का प्रयास करता है| इसी प्रयास के अंतर्गत 'Zuari Industries' के सहयोग से गोवा में 'ज़ारी' नामक बस्ती में सफाई कार्य को एक अभियान का रूप दिया गया है|

4. तकनीकी पहलू 'परिशोध' - इंजीनियर होने के नाते इस संस्था के सदस्यों का विचार है कि हमारी शिक्षा व्यर्थ है यदि हम देश के तकनीकी विकास में, ख़ास तौर से गाँवों के विकास में इसका प्रयोग न करें| **परिशोध** निर्माण की ऐसी ही एक पहल है जिसमें उपयोगी तकनीकों को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे अभावग्रस्त लोगों की ज़िन्दगी को सुधारा जा सके| इसी प्रयास में 'राईला' गाँव के लिए एक स्वचालित जल मापन का संजाल भी बनाया गया है | परिशोध ने 'NIF' और 'TIDE' के सहयोग से 'SUMMER TECHNICAL INTERNSHIPS' भी आरम्भ किये हैं|

बिट्स पिलानी के इतिहास में एन.एस.एस के अध्याय की शुरुआत 1969 में हुई। डॉ. राधा कृष्णन के नेतृत्व में यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमिशन ने शैक्षिक संस्थानों में एन.एस.एस की शुरुआत की थी। एन.एस.एस बिट्स पिलानी के कुल सात भाग हैं, जिनके सामंजस्य से जनकल्याण का काम बिना रुकावट चलता रहता है। एन.एस.एस का स्कूलिंग विभाग उन बच्चों को अतिरिक्त शिक्षा की सुविधा मुहैय्या कराता है, जिनके मन में अपने विद्यालय में पढ़ाए जा रहे पाठ्यक्रम से कुछ अधिक सीखने की इच्छा तो है, परंतु इन सुविधाओं को पाने के लिये जेब में पैसे नही हैं। शाम के 5 बजते ही क्वार्टर नं. 405 (जो की कनॉट के पास स्थित है) में उत्साह से भरे 80 से ज़्यादा कुछ ऐसे ही बच्चे और उनसे भी अधिक उत्साहित एन.एस.एस के इस प्रभाग के सदस्य मौजूद होते हैं। 60 से भी अधिक बिट्सियंस इन बच्चों को पढ़ाते हैं, जो इस भाग के सदस्य हैं। स्कूलिंग विभाग की सफलता को इस बात से ही आँका जा सकता है जब एन.एस.एस द्वारा पिलानी के लगभग सारे विद्यालयों के बीच एक परीक्षा रखी गई तो उसमें इन बच्चों को दूसरों के मुकाबले अधिक अंक प्राप्त हुए। एन.एस.एस. न केवल किताबी शिक्षा, बल्कि कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम के ज़रिये भी बच्चों को आधुनिकीकरण की धारा में लाने के लिये प्रतिबद्ध है।

अपने इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के अंतर्गत एन.एस.एस. के स्वयंसेवक सप्ताह में 3 बार पास के झेरली गाँव में अपने लैपटॉप लेकर जाते हैं, और बच्चों को प्रशिक्षण देते हैं। वे एन.आई.आई.टी. के सहयोग से अपने द्वारा प्रशिक्षित बच्चों को प्रमाणपत्र देने की योजना पर भी विचार कर रहे हैं, जिससे भविष्य में इन विद्यार्थियों के पास अपनी काबिलियत का सुबूत रहेगा, और अच्छी जीविका पाने में भी सहायता मिलेगी।

इसके अतिरिक्त NSS बिट्स के तीनों फेस्ट्स में भी अपनी कार्यशीलता का परिचय देता है। बॉसम में 'जुनून', ओएसिस में अपने स्टॉल से NSS सदा ही सुर्खियों में रहा| इस स्टॉल पर साल-दर-साल दर्शकों व ग्राहकों की संख्या बढ़ती रही है, और ओएसिस-2012 में यहाँ कुल 1.56 लाख रुपये की बिक्री हुई। अपोजी में NSS, 'निर्माण' के साथ मिल कर 'धीति' का आयोजन करता है जिसमें प्रतियोगियों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सामाजिक समस्याओं का हल खोजना होता है। इस वर्ष C.S.A., I.S.A. और निर्माण की सहायता से NSS एक नई प्रतियोगिता 'सोशल हैकाथॉन' आयोजित कर रहा है जिसमें निर्धारित समय में प्रतियोगियों को अपनी कोडिंग क्षमता का परिचय देते हुए दी गई सामाजिक समस्या के समाधान स्वरूप एक एप्लीकेशन बनानी होगी।

NSS स्वास्थ्य सुविधाओं के महत्व को लेकर विशेष रूप से जागरूक है। निकटवर्ती गाँवों गारिंडा, भास, झेरली और घुमनसर में NSS की स्वास्थ्य इकाई सक्रिय है। इन गाँवों में वे पहले सर्वेक्षण करवाते हैं, और जो आम बीमारियाँ सामने आती हैं, उनके निदान में जुट जाते हैं। इसके लिये NSS परिसर से व बाहर से चिकित्सकों को इन गाँवों में ले जाता है। साथ ही NSS हर वर्ष रक्तदान शिविर का भी आयोजन करता है। एशिया में किसी भी महाविद्यालय से सबसे अधिक रक्तदान (841 यूनिट) का रिकॉर्ड भी बिट्स-पिलानी के एन.एस.एस के नाम दर्ज़ है। सामाजिक चेतना के विकास में भी एन.एस.एस की बड़ी भूमिका है। चेतना शिविरों का नियमित आयोजन करवाने के साथ वे सर्वेक्षण कर लोगों की समस्याओं का जायज़ा भी लेते हैं, और फिर ज़रूरी कदम उठाते हैं। जनता को अपने अधिकारों का भान कराना NSS का उद्देश्य रहता है। कुछ समय पहले एन.एस.एस. ने लोगों को लेबर यूनियन कार्ड बनवाने के फायदे और तरीका बताया था जिससे लोगों को काफी मदद मिली। 'उमंग' NSS बिट्स पिलानी का एक ऐसा कार्यक्रम है जो प्रतिभाशाली किन्तु ज़रूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति देता है। उमंग के लिए बिट्सियंस से ही चंदा एकत्रित किया जाता है जो कि 2012 में कुल 2,19,000 रुपये रहा| उमंग से अभी तक कुल 50 छात्र लाभांवित हुए हैं।

'सम्पादकीय एवं प्रचार' भी NSS का अभिन्न अंग है। इस भाग में तकनीकी टीम मुख्य है, जिसका उद्देश्य एन.एस.एस. द्वारा किये जा रहे कामों का प्रचार और समाज के सम्पन्न वर्ग से निचले तबके की जनता के उत्थान के लिये आगे आने की अपील करना है। इस के लिये वे वीडियो, पोस्टर आदि का प्रयोग करते हैं। उमंग के अलावा बाकी सारे कार्यों के लिये धनराशि भारत सरकार के युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय द्वारा NSS को दी जाती है। NSS के स्वयंसेवकों को इन कार्यों को सतत रूप से करते रहने की प्रेरणा इन कार्यों को करने से मिलने वाला आत्मसंतोष प्रदान करता है। NSS बिट्स पिलानी के प्रभारी प्रोफेसर डॉ. एच.डी. माथुर हैं और प्रतीक कुमार इसके अध्यक्ष हैं। प्रतीक अन्य छात्रों को NSS का भाग बनने एवं पिलानी की भौगोलिक स्थिति का लाभ उठा कर जन कल्याण के कार्यों में लग जाने का संदेश देते हैं। NSS के 'उमंग' प्रभाग की न्यूक्लियस मेम्बर प्रज्ञा अपने शब्दों में कहती हैं:-

" कभी उस मुरझाए हुए चेहरे पर मुस्कान लाकर तो देखो,
कभी उस हिचकिचाते हुए हाथ को सहारा देकर तो देखो |
हमारी तरह मुस्कान आपके चेहरे पर भी ठहर जाएगी,
हमारी तरह आपकी भी कुछ कर दिखाने की चाहत उभर आएगी || "

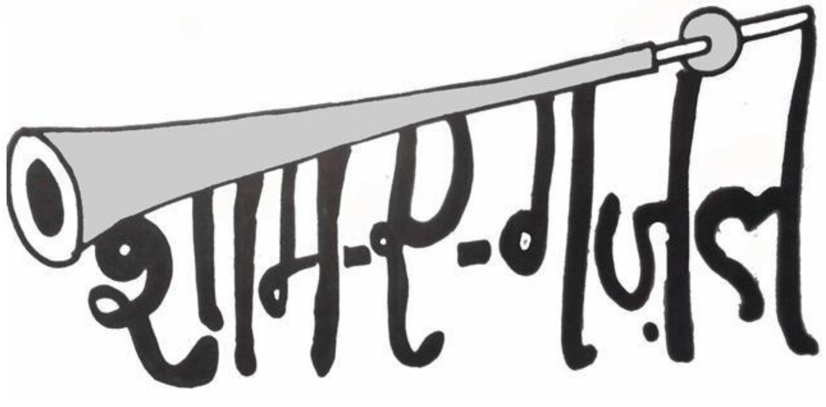

था मैं नींद में और मुझे सजाया जा रहा था ,
बड़े ही प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था ||

ना जाने था वो कौन सा अजीब खेल मेरे घर में ,
बच्चों की तरह मुझे कंधे पे उठाया जा रहा था ||

था पास मेरे मेरा हर अपना उस वक़्त ,
फिर भी मैं हर किसी के मुंह से बुलाया जा रहा था ||

जो कभी देखते भी ना थे मोहब्बत की निगाह से ,
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था ||

मालूम नहीं हैरान था हर कोई मुझे सोते हुए देख कर ,
जोर जोर से रोकर मुझे हँसाया जा रहा था ||

काँप उठी मेरी रूह मेरा वो मकाँ देख कर ,
पता चला मुझे दफ़नाया जा रहा था ||

-आवेश कुमार सिंह

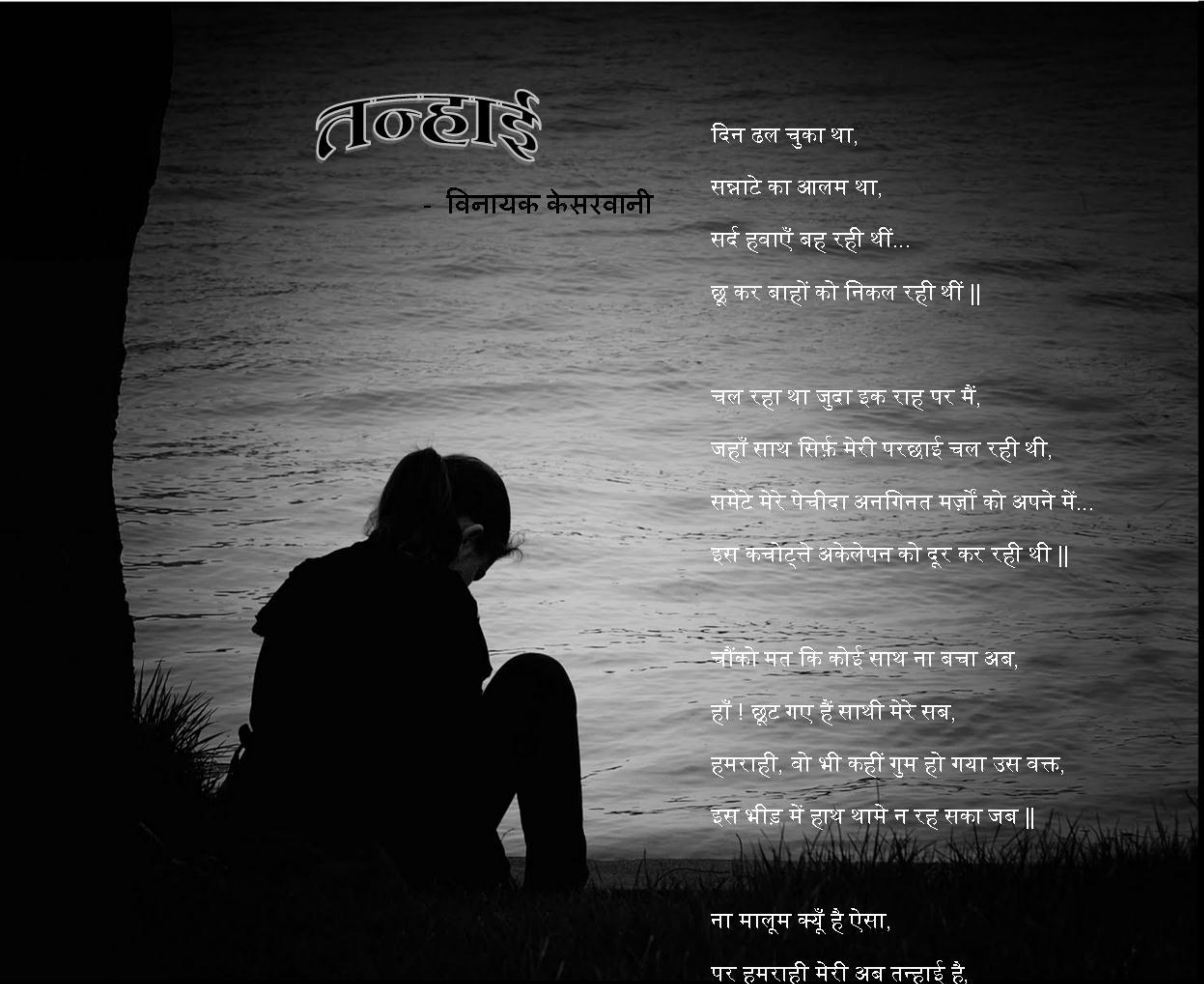

तन्हाई

- विनायक केसरवानी

दिन ढल चुका था,
सन्नाटे का आलम था,
सर्द हवाएँ बह रही थीं...
छू कर बाहों को निकल रही थीं ||

चल रहा था जुदा इक राह पर मैं,
जहाँ साथ सिर्फ़ मेरी परछाई चल रही थी,
समेटे मेरे पेचीदा अनगिनत मर्ज़ों को अपने में...
इस कचोटते अकेलेपन को दूर कर रही थी ||

चौंको मत कि कोई साथ ना बचा अब,
हाँ ! छूट गए हैं साथी मेरे सब,
हमराही, वो भी कहीं गुम हो गया उस वक्त,
इस भीड़ में हाथ थामे न रह सका जब ||

ना मालूम क्यूँ है ऐसा,
पर हमराही मेरी अब तन्हाई है,
मालूम नहीं क्यूँ हुआ ये,
माना गलती ये है मेरी, ना इसकी कोई सफ़ाई है ||
हाथ छूट गए,
क्योंकि थाम ना पाया उन्हें कस के...
अरे कोई ये भी तो सोचो,
क्या वो रुक कर मुझे थाम सके ?

छूट गया हमराही है,
छूट गए सब साथी हैं,
बस मैं और मेरी परछाई है,
बस मैं और मेरी तन्हाई है ||

ठरकी इंडिया

-अर्चित अग्रवाल

आज बेवजह इधर-उधर की बातें कर, लेख की भूमिका बाँधने का ज़रा भी मन नहीं है। बात सीधे मुद्दे की करते हैं। मैं यह नहीं कहूँगा की मुद्दा आज का है, एकदम ताज़ा है। पर हाँ, शायद पिछले कुछ दिनों से देश में जो हलचल मची है, उसके बाद मैंने (या कहें अधिकतर लोगों ने) इस पर विचार करना शुरू किया है। मुद्दा है यौन उत्पीड़न का। या अलग तरह से कहें तो मुद्दा है 'हमारी मानसिकता' का।

यौन शोषण शुरू होता है गलियों से। किसी राह चलती लड़की को 'माल' कह देना, बेवजह माँ-बहन को गालियों में घसीटना और ऐसी अनेक करतूतें जिसे शायद दोस्तों के बीच आपने 'कूल' समझा होगा, शोषण का ही हिस्सा हैं। और इसका सबसे भयावह व चिंताजनक रूप है – बलात्कार, जिसे मिटाना तो दूर, कम करने में भी हम अब तक नाकाम रहे हैं।

कुछ महीने बीत चुके 16 दिसंबर को हुई दिल्ली बलात्कार की शर्मनाक घटना को मगर अब भी कोई बदलाव नज़र नहीं आता। दैनिक अखबार अब भी वैसी ही ख़बरों से भरे नज़र आते हैं। पर हाँ, खबर में बासीपन ज़रा भी नहीं होता। माना कि जुर्म वही है पर हर रोज़ एक नया शहर, एक नई पीड़िता और एकदम नए अपराधी। दुष्कर्म करने वालों की सूची में अनजान, मित्र, पड़ोसी से लेकर नज़दीकी संबंधी तक सभी होते हैं। जहाँ इतनी विविधता हो वहां बासीपन का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। इन ख़बरों से कहीं देश की जनता ऊब ना जाए, इस बात का पूरा ख्याल रखते हैं हमारे नेता। कुछ अपनी अटूट चुप्पी से तो कुछ अपने 'मुख(र्जी)' से विवादास्पद कथन बयाँ कर सुर्ख़ियों में बने रहते हैं। जी माफ़ कीजिएगा, हमारे आदरणीय नेतागण इतने भी कम्बखत नही हैं। उनका कहना है कि जैसी घटनाएँ देश में हो रही हैं, वे निंदनीय हैं।

औरतों के साथ हो रहे इन दुष्कर्मों के खिलाफ अब देशवासी जागने लगे हैं। कई समाज सेवी दल, गैर-सरकारी संगठन और सैंकड़ों युवा, सरकार और क़ानून के निर्माताओं से बलात्कार जैसे नीच जुर्म के खिलाफ सख्त क़ानून बनाने की माँग कर रहे हैं। लोगों का रोष देखकर तकरीबन हर प्रदेश ने औरतों की सुरक्षा बढ़ाने का फैसला किया है और हैवानों को दी जाने वाली सज़ा पर भी विचार किया जा रहा है। परन्तु मेरी दृष्टि में अब भी ज्यादा कुछ हुआ नहीं है, अब भी हम इस विषैले सांप की पूँछ ही काट रहे हैं। जब तक लाठी से ज़ोर लगाकर मुँह न कुचला जाए, सांप डसना नहीं छोड़ता।

अब इसे 'पीड़िता की लाचारी बताना' या 'क्या फरक पड़ता है कहना' जैसी मानसिकताओं को पीछे छोड़कर हम युवाओं को मिलकर आगे आना होगा। हो सकता है, अब तक हम किसी आंदोलन का हिस्सा न रहे हों, पर अब ज़रुरत पड़ी तो हमें इसके लिए भी तैयार रहना होगा। और इसकी शुरुआत होगी अपने आस-पड़ोस, जिले-कस्बे में शोषण की छोटी से छोटी घटना का विरोध करके। पर इंडिया गेट जाकर या 'कैंडल मार्च' निकालकर प्रदर्शन करने से पहले, हम युवाओं को जरुरत है अपने आप को बदलने की, यह तय करने की कि बस स्टॉप पर शॉर्ट स्कर्ट में खड़ी कोई लड़की, लड़की ही रहे- 'माल' नहीं। आज जरुरत है, देश को 'ठरकी इंडिया' से 'लवली इंडिया' बनाने की।

बिट्स की संस्कृति— एक अनोखी मिसाल

रोजमर्रा की भाग-दौड़ से तंग इंसान करे भी तो क्या? शायद इसीलिए हम अपने परिवार, दोस्तों या करीबियों के साथ कुछ राहत के पल बिताने के मौके ढूंढते रहते हैं| हमारी इसी अभिलाषा ने जन्म दिया त्योंहारों को| जितने विभिन्न संप्रदायों के लोग हमारे देश में रहते हैं, उतनी ही तरह की विभिन्न संस्कृतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं और उतने ही तरह के विभिन्न त्योंहारों का मेलजोल भारत को विश्व में एक अलग पहचान दिलाता है |

इन्हीं अनगिनत त्योंहारों से हम भारतवासियों का नाता कुछ ऐसा जुड़ गया है कि इनके बिना एक अधूरापन महसूस होने लगता है| अपने घर से दूर हम जब बिट्स आये, तब हमने यही सोचा था कि शायद हमारी संस्कृति और त्योंहारों से भी हम उतने ही दूर चले जायेंगे, उनसे हमारा नाता टूट जाएगा| मगर यहाँ कुछ अलग ही माहौल था| यहाँ आकर पता लगा कि यहाँ नाते टूटते नहीं, बल्कि और गहरे बंध जाते हैं| हम सब जो अब तक केवल अपने क्षेत्र से जुड़े त्योंहार मानते थे, आज हमारे देश के न जाने कितने ही त्योहार साथ मिलकर मनाने लगे हैं| यह सब संभव हुआ बिट्स में मौजूद 'कल्चरल असॉक्स' की मदद से| आइये जानते हैं इन एसॉक्स को संक्षिप्त में:

उत्कल समाज – ओडिशा की संस्कृति को संजोता उत्कल समाज **गणेश पूजन** व **सरस्वती पूजन** करवाता है, जिसका आयोजन प्रोफ़ेसर सी.बी. गुप्ता के निवास पर किया जाता है| वहाँ प्रसाद वितरण के पश्चात भोज का भी प्रबंध किया जाता है| इसके अलावा उत्कल समाज विशेष तौर पर मछली के लिए प्रसिद्ध ग्रब का आयोजन भी करवाता है|

आंध्र समिति – बिट्स का सबसे बड़ा रीजनल असॉक आन्ध्र समिति **गणेशोत्सव** व **कृष्ण जन्माष्टमी** मनाते हुए साल की शुरुआत करता है| जन्माष्टमी के मौके पर उनके द्वारा आयोजित **मटकी-फोड़** प्रतियोगिता में 17-18 लोगों की कई टीमें हिस्सा लेती हैं| ग्रब व नाइट के आयोजन में भी आन्ध्र समिति किसी से पीछे नहीं है| इनकी अपनी जनता ही इतनी विशाल है कि ये स्वयं के लिए औडी में **तेलुगु फिल्मों** का भी आयोजन करते हैं|

महाराष्ट्र मंडल – "मामा" के नाम से मशहूर ये असौक अपनी स्फूर्ति और अत्यधिक उत्साह के लिए जाना जाता है| **गणेश उत्सव** का जोश हो, महाराष्ट्र के लज़ीज़ व्यंजन हों या नाइट की चकाचौंध हो, महाराष्ट्र मण्डल किसी से पीछे नहीं रहता|

गुर्जरी – गुजराती परंपरा की शान गुर्जरी एसॉक दुर्गा पूजा के दौरान अपनी भव्य और शानदार **गरबा नाईट** के आयोजन के लिए जाना जाता है| इस आयोजन से कुछ दिन पूर्व एक वर्कशॉप भी आयोजित करवाई जाती है, जिसमें इच्छित लोगों को गरबा/डांडिया सिखाया जाता है| इसके साथ ही उनके ग्रब में गुजराती व्यंजनों के लिए भी यह एसॉक मशहूर है|

मोरुछाया – बंगाल के बाशिंदों का ये एसॉक भी **दुर्गा पूजा** के दौरान सक्रिय रहता है| 3 से 5 दिनों तक माँ दुर्गा का पंडाल सजाया जाता है और पूरे उत्साह के साथ दुर्गा पूजा का आयोजन करवाया जाता है| रौशोगुल्ले व अन्य बंगाली मिठाई प्रेमियों को इनके द्वारा आयोजित ग्रब का बेसब्री से इंतज़ार रहता है|

संगम - अपने आप को हिंदी भाषी राज्यों का असौक कहने वाला संगम मुख्यतः उत्तर प्रदेश की जनता से मिलकर बना है | गौरतलब है कि हिंदी एक्टिविटीज़ सोसायटी के अधिकांश सदस्य मूलतः संगम का ही हिस्सा बन जाते हैं | अपनी प्रतिभासंपन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से लेकर अपने स्वादिष्ट भोजन तक संगम में ठेठ यू.पी. के सारे रंग देखने को मिलते हैं |

पी.सी.ए. – जानदार पंजाबी संस्कृति की पहचान पी.सी.ए. गुरुनानक जयंती पर एक विशाल **लंगर** व भजन संध्या का आयोजन करवाती है| इसके अलावा बैसाखी और गुरु पूरब के दिन भी ये असौक सक्रिय रहता है | पी.सी.ए. की नाईट यदि उनके जोश से भरपूर भांगड़े के लिए जानी जाती है, तो मसालेदार पंजाबी खाने व लस्सी के लिए भी सभी को इनके ग्रब का इंतज़ार रहता है|

मरुधरा – मरुभूमि राजस्थान की संस्कृति का प्रतीक मरुधरा मकर सक्रांति के अवसर पर **सितोलिया** व **पतंगबाजी** का आयोजन करवाता है| बिट्स के राजस्थान में होने से लोगों को यहाँ की संस्कृति के बारे में जानने की काफ़ी इच्छा रहती है, जिसे ये लोग अपनी नाईट व ग्रब के माध्यम से मरुधरा के सदस्य बखूबी पूरा करते हैं| उनके द्वारा आयोजित ग्रब के प्रमुख आकर्षण 'दाल-बाटी-चूरमा' रहते हैं| गौरतलब है कि हर नए अकादमिक वर्ष की शुरुआत में सबसे पहले मरुधरा की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देखने को मिलती हैं|

मध्यांश – देश के मध्य में स्थित मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की अलौकिक संस्कृति को पिलानी के परिसर में जीवित रखने का बेहतरीन काम करता है मध्यांश| बहुत कम समय में इसने सभी के बीच अपनी एक अलग जगह स्थापित कर ली है| "ताल" के नाम से प्रख्यात मध्यांश नाइट प्रति-वर्ष नए मापदंड स्थापित कर रही है| अपने लज़ीज़ ग्रब के साथ-साथ **मटकी फोड़** तथा **दिवाली मिलन** जैसे आयोजनों के माध्यम से ये अपनी धरती से आए गुरुजनों से भी काफ़ी जुड़े रहते हैं |

कैपिटोल - दिलवालों की दिल्ली से आए युवाओं की टोली कैपिटोल नामक इस असौक का हिस्सा बनती है | इस मशहूर असौक की सबसे ख़ास पेशकश होती है इनकी नाइट पर होने वाला "फ़ैश-पी" | हर वक्त चर्चा में रहने वाला ये असौक अपने ग्रब के माध्यम से दिल्ली के प्रख्यात व्यंजनों को हम तक लेकर आता है|

एच.सी.ए. — हरयाणवी संस्कृति से प्रभावित 'हरयाणा कल्चरल असोसिएशन' कैम्पस पे उभरते असौक्स में शामिल है| इनकी शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुति उतनी ही मनमोहक होती है जितना लज़ीज़ इनका ग्रब |

पी.टी.एम.,कैराली,उद्गम — पिलानी तमिल असोसिएशन, केरल के छात्रों का संगठन और हाल ही में उत्तरांचल की जनता द्वारा बनाया गया असौक उद्गम फ़िलहाल केवल अपने स्थानीय व्यंजनों से ही बिट्सियन छात्रों का मन मोहते हैं |

मौर्य विहार — "जिया हो बिहार के लाला"...इस गाने के शब्दों को साकार करते हुए और इसमें छुपी मस्ती से सराबोर बिहार और झारखण्ड के छात्रों का दल है 'मौर्य विहार' | अत्याधिक सदस्य न होने के कारण इनकी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ नाइट में नहीं अपितु सिर्फ़ फाउंडर्स में देखने को मिलती हैं| हालाँकि अपने स्वादिष्ट ग्रब के लिए तथा मकर सक्रांति पर होने वाले एक छोटे से आयोजन के लिए मौर्य विहार को जाना जाता है |

काम चाहे नाइट्स के माध्यम से अपनी संस्कृति को प्रदर्शित करने का हो या अपने क्षेत्र के त्योंहार मानाने का, अपने क्षेत्रीय व्यंजनों के स्वाद को लोगों तक पहुँचाने का हो या मिलकर कहीं घूमकर आने का, बिट्स के रीजनल असॉक्स इन्हें बखूबी निभाते हैं | ये असॉक्स बिट्सियन जिंदगी के सफ़र का ऐसा हिस्सा बन चुके हैं जिसे एक बिट्सियन आजीवन भुला नहीं सकता|

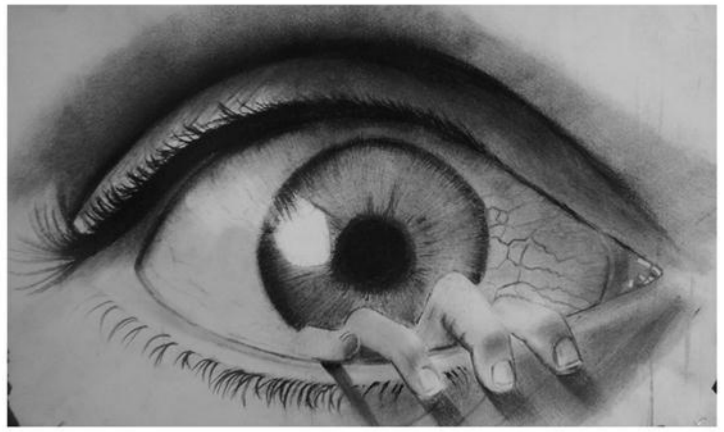

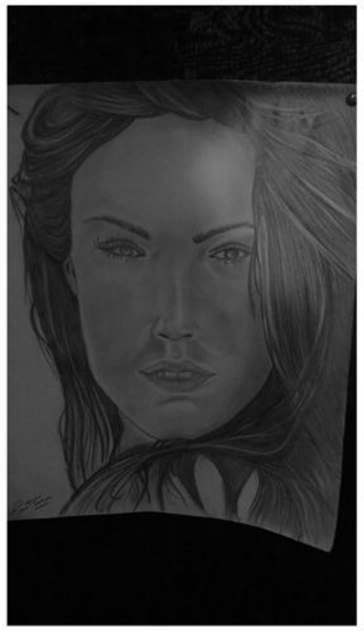

“क्रैक” की करामातें

Courtsey : CrAC

कैसा समाजवाद???

- रवि गुप्ता

भारत में समानता अब
हर ओर बढ़ती जा रही,
धनी और निर्धन के बीच का
अंतर वह भरती जा रही।

धनी है खाते कम अन्न,
चाहे प्रियदर्शी बनने को,
निर्धन है पाता सचमुच कम,
बस प्राण बचाय रखने को।

धनी है पीते रंगारंग में,
शानोशौकत बढ़ाने को,
निर्धन है पीते दिनभर थककर,
क्लांति अपनी मिटाने को।

धनी पहनते न्यून वस्त्र,
बदन छटा दर्शाने को,
निर्धन की बस सीमा इतनी,
अस्मत अपनी छुपाने को।

धनी मांगते वोट सभी से,
सत्ता अपनी बचाने को,
निर्धन मांगे धन-दान,
उदर क्षुधा मिटाने को।

खान-पान और रहन-सहन में
दोनों हुए समान,
ऐसे समाजवाद को तुम
क्यों देख रहे भगवान?

सब अच्छा लगने लगता है !!!

- माधव वार्ष्णेय

इक चेहरा घुलने लगता है,
हर इक में मिलने लगता है,
आईने में अक्स अपना भी
उस जैसा दिखने लगने लगता है

नैनों में कोमल हरा-भरा,
कोई सपना उगने लगता है,
जब ऐसा कुछ हो जाए तो
सब अच्छा लगने लगता है।
बैठे ठाले खो जाता है,
खुद से ही कुछ बतियाता है,
छेड़ो तो भी सह लेता है,
बिन बात के ही मुस्काता है...
बेनाम कोई धुन जगती है,
कुछ होठ पे हिलने लगता है,
जब ऐसा कुछ...
मंदिर के चक्कर काटेगा,
बच्चों को गुब्बारे बाँटेगा,
बदली वाली रातों में भी
आकाश में तारे छाँटेगा...
पूछो तो झूठी कसमें खा
कुछ किस्से गढ़ने लगता है,
जब ऐसा कुछ...
चलते-चलते भी रुका रहे,

जो सजदे में हो, झुका रहे,
हर बात नुमाया हो जाए
जब कोशिश करे कि छुपा रहे...
कुछ लिखता और मिटाता है,
और फिर कुछ लिखने लगता है,
जब ऐसा कुछ हो जाए तो
सब अच्छा लगने लगता है ||

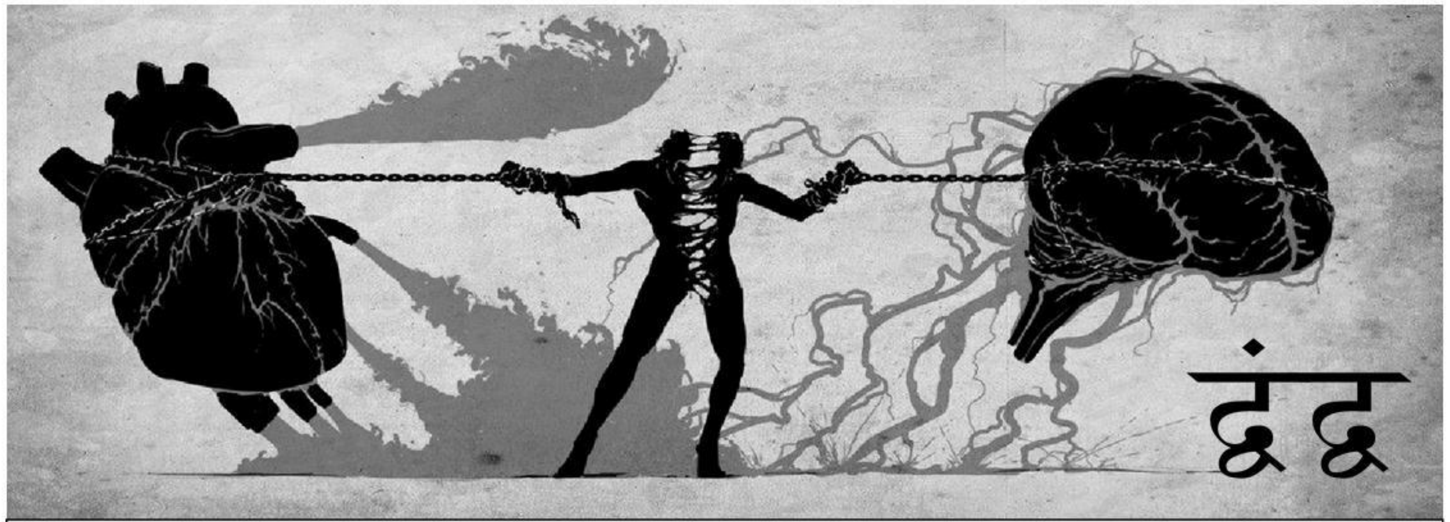

द्वंद्व

ऑफिस में आज भी विवेक का काम में मन नहीं लग रहा था| हर रोज की तरह वह फिर अपने ही खयालों में खोया था| यूँ तो काम करते हुए उसे चार साल हो चुके थे और वह काम काफी अच्छा भी कर रहा था| मगर वह जानता था, कि उसका दिल कुछ और ही चाहता है| हर बार की तरह फिर वही बात उसे सता रही थी, कि आखिर क्यों वह इंजीनियर बना, जबकि उसकी इच्छा तो कला क्षेत्र में काम करने की थी| वह तो फिल्म-डायरेक्टर बनना चाहता था|

तभी उसकी नज़र पास ही टंगे एक कैलेंडर पर लिखी एक पंक्ति पर पड़ी| मोटे लाल अक्षरों में लिखा था, 'आप जहाँ हैं, अगर वहाँ से प्रसन्न नहीं, तो आप वहाँ से हट सकते हैं, आखिर आप वृक्ष तो नहीं हैं'| पढ़ते ही उसके मन में कई विचार उमड़ पड़े| उसके दिल और दिमाग के बीच द्वंद्व शुरू हो गया| ऐसा पहली बार न हुआ था| अक्सर यह जंग कुछ अधिक समय के लिए चला करती थी और विजय उसके दिमाग की ही होती थी, मगर इस बार माज़रा कुछ और ही था| उसके दिल के पास अचानक आये साहस को उसका दिमाग भी झेल नहीं सका और आज यह जंग कुछ ही क्षणों में समाप्त हो गयी| इस बार उसका दिल जीत गया|

उसने मन ही मन फैसला कर लिया की वह अब यह काम छोड़कर अपने दिल की सुनेगा, अब वह अपने सपने को पूरा करेगा| उसने सोचा की शायद शुरुआत में ज्यादा पैसे न मिले, पर कम से कम काम करने में उसे मज़ा तो आएगा| उसने हिम्मत करके उसी समय त्यागपत्र लिखना प्रारंभ कर दिया, क्योंकि उसे पूरा एहसास था कि अगर उसने अधिक समय लगाया तो इस निर्णय पर से उसकी पकड़ कमजोर पड़ जायेगी| उसकी मनोदशा को उसके कांपते हुए हाथ भली-भांति बयाँ कर रहे थे|

उसने त्यागपत्र पूरा लिखा ही था, की उसकी पत्नी का फोन आ गया| उसने सोचा, चलो अच्छा है, इसे भी बता दूं| फोन उठाते ही उसकी पत्नी कहने लगी,

'क्या हुआ, इतनी देर कैसे लगा दी आज फोन उठाने में?'

वह कुछ कहता, उससे पहले ही उसकी पत्नी फिर कहने लगी,

'कल जो माँ के टेस्ट करवाए थे, उनकी रिपोर्ट आ गयी है| खबर अच्छी नहीं है. डॉक्टर साहब कह रहे थे की जल्द ही कुछ करना पड़ेगा और जरूरत पड़ी तो ऑपरेशन भी करवाना पड़ सकता है|'

'क्या?', विवेक ने चौंकते हुए कहा|

'मुझे तो लगा शायद कोई छोटी सी दिक्कत होगी, यह तो बड़ी समस्या खड़ी हो गयी| चलो, आज आते हुए डॉक्टर से मिलते हुए आता हूँ', विवेक ने चिंता भरे स्वर में कहा|

'ठीक है आप देख लेना| और हाँ, आते हुए एटीएम से बंटी की स्कूल फीस के पैसे लेते आना, तीन बार फोन आ चुका उसके स्कूल से| अच्छा मैं रखती हूँ, धोबी कपडे लेने आया है| ' ऐसा कहते हुए उसने फोन काट दिया|

विवेक कुछ सोच पाता, उससे पहले ही रामू ने आकर कहा, 'विवेक सर, बड़े साहब ने आपको ऑफिस में बुलाया है| वह जल्दी से उठा, अपना त्यागपत्र मोड़कर अपने कोट की पॉकेट में डाला, और उनके ऑफिस की ओर चल दिया|

ऑफिस में पहुँच कर उसने बॉस से कहा, 'सर, आपने बुलाया?'हाँ विवेक, एक अच्छी खबर है, तुम्हारे काम को देखते हुए तुम्हें प्रमोट कर दिया गया है|'

'क्या?', विवेक ने चौंकते हुए कहा|

'और यही नहीं, तुम्हारी सेलेरी में भी 20 प्रतिशत की वृद्धि कर दी गयी है, चलो जल्दी से इस फॉर्म पर साइन कर दो|' , फॉर्म की ओर इशारा करते हुए बॉस ने कहा|

विवेक यह सुनकर काफी हैरान था| उसके दिमाग में फिर वही ख़याल दौड़ने लगे, फिर वही द्वंद्व शुरू हो चुका था| एक तरफ उसका सपना था तो दूसरी ओर उसकी जिम्मेदारियाँ, मगर इस बार सब कुछ एकतरफा था| इस बार उसके सपने की, उसकी जरूरतों के आगे कोई तवज्जो न थी| वह बस यही सोच रहा था कि शायद अब माँ का अच्छा इलाज़ हो पायेगा और बंटी का दाखिला भी अच्छे स्कूल में हो पायेगा|

उसका दिल धीमे-धीमे धड़क रहा था| शायद वह भी भांप चुका था, कि उसकी हार अब तय है| पॉकेट में रखा त्यागपत्र भी लाचार सा नज़र आ रहा था, उसका प्रभाव जो अब क्षीण हो चुका था| फिर वही पेन उसके हाथों में था. उसका सपना फिर बिखर रहा था, लेकिन फिर भी इस बार न तो उसके मन में घबराहट थी और न ही डर, उसके हाथ स्थिर थे| उसने साइन किये और अचानक हुए इस घटनाक्रम के बारे में सोचते हुए वह अपनी टेबल की ओर चल दिया|

वहाँ पहुंचकर उसकी नज़र फिर उसी कैलेंडर पर पड़ी. उसे देखकर वह मुस्कुराने लगा| उसे एहसास हो चुका था, कि शायद हम मनुष्य भी किसी वृक्ष से कम नहीं| हमारी जड़ें अदृश्य भले ही हों, उनकी जकड़ कहीं अधिक शक्तिशाली है. वक्त इन्हें सींचता है, वक्त के साथ ये फैलती हैं और इनके फ़ैलने की गति का अंदाज़ लगाना भी हमारी कल्पना से परे है| विवेक ने देर कर दी थी| अपने सपने को पूरा करने के लिए इन जड़ों को तोडना जरूरी था, जिसका दर्द सहने की हिम्मत उसमें न थी|

-सौरभ बियानी

...अच्छा है !!!

-प्रकाश सिंह

बाद-ए-फ़िराक हम कैसे हैं, सवाल अच्छा है |
हमें कहने में क्या हर्ज़ है कि हाल अच्छा है |

खामोश रहे हम अपने ही तलफ-ए-सुकून में,
न सीखा कभी कि रवैय्ये में ज़रा सा उबाल अच्छा है |

तुम भी गुज़रे हो शब्-ओ-रोज़ जिस आलम से हम गुज़रे,
हकीक़त से लगे कोसों दूर पर ख़याल अच्छा है |

इशरत कि उम्मीद तो अब खुद से हमें भी नहीं
पर आपका नुमाइश-ए-मलाल अच्छा है |

अब है ये कश्मकश कि आह निकलेगी या सांस आएगी,
ज़िंदगी और मौत का ये बवाल अच्छा है |

स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती पर विशेष

"उठो! जागो! और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत!" ये सुविचार उस महान विभूति के हैं जिन्होंने अपने 39 वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में उस अभूतपूर्व स्थान को प्राप्त कर लिया जो आधुनिक भारत के किसी अन्य मनस्वी को प्राप्त न हो सका| जी हाँ, हम बात कर रहे हैं स्वामी विवेकानंद जी की| आज जब हम विज्ञान के युग में प्रवेश कर चुके हैं तो हमें आधुनिकता की आंधी में अध्यात्म को भूलने की गलती नहीं करनी चाहिए| इस सन्दर्भ में स्वामी जी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कल हुआ करते थे; आवश्यकता केवल वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनका सही अर्थ खोजने की है |

स्वामी जी के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना "शिकागो सर्वधर्म सम्मलेन" में हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करना रही| उनके अतिरिक्त अन्य सभी वक्ताओं ने अपने-अपने वक्तव्य का प्रारंभ संबोधन 'लेडीज एंड जेंटलमेन' से किया; किन्तु स्वामी जी ने हिन्दू-धर्म की मूल भावना 'वसुधैव कुटुम्बकम' से उन श्रोताओं को अपने संबोधन 'माई अमेरिकन ब्रदर्स एंड सिस्टर्स' द्वारा ही परिचित करवा दिया| सात हज़ार श्रोतागणों की करतल ध्वनि से प्रांगण गूँज उठा और इसी के साथ परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा तत्कालीन भारत भी विवेकनन्द जी के विचार वास्तव में अतुलनीय हैं और उनका व्यवहार भी| एक बार जब स्वामी जी रेलवे स्टेशन पर गाड़ी से नीचे उतरे तो उनसे एक नीग्रो कुली ने हाथ मिलाते हुए कहा,"मुझे खुशी है कि मेरी जाति के एक व्यक्ति ने इतना सम्मान प्राप्त किया|" स्वामी जी ने कुली से हाथ मिलाकर उसे धन्यवाद दिया| इस पर एक पश्चिमी शिष्य ने उनसे पूछा कि ऐसी स्थितियों में वे उनको क्यों नहीं बताते कि वे एक भारतीय हैं, एक नीग्रो नहीं| स्वामी जी ने उत्तर दिया - "दूसरों को नीचा दिखाकर मैं ऊपर उठूँ| मैं इस पृथ्वी पर इसलिए नहीं आया हूँ|" आज के भौतिकतावादी युग में ये विचार निश्चित ही युवा वर्ग के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करेंगे| श्री अरविन्द कहते हैं कि विवेकानंद का पश्चिम में जाना विश्व के सामने पहला संकेत था की भारत जाग उठा है...न केवल जीवित रहने के लिए बल्कि जीतने के लिए|

स्वामी जी का विश्वास युवा पीढ़ी में था| वे कहा करते थे-"मेरा विश्वास नई पीढ़ी में है, आधुनिक पीढ़ी में है| उनमें से ही कार्यकर्त्ता मिलेंगे, वे सिंहों की तरह सारी समस्याओं का हल निकाल लेंगे|" स्वामी जी के विचारों के सिंह आज कहाँ हैं? वे यही युवा जन हैं, वे ही विश्व को जागृत कर सकते हैं क्योंकि उनके पास आधुनिकता है, ज्ञान है, साहस है; पर सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता दुनिया को हिला देने वाले विचारों का जागृत होना है जो केवल स्वामी जी के विचारों से ही संभव है|

एक बार स्वामी जी से किसी ने पूछा कि देश की स्त्रियों के लिए आपका क्या सन्देश है जिस पर उन्होंने उत्तर दिया - वही जो पुरुषों के लिए है, "भारत और भारतीय धर्म के प्रति विश्वास और श्रद्धा रखो| तेजस्वनी बनो, हृदय में उत्साह भरो, भारत में जन्म लेने के कारण लज्जित न हो और स्मरण रखो की यद्यपि हमें दूसरे देशों से कुछ लेना अवश्य है पर हमारे पास दुनिया को देने के लिए दूसरे की अपेक्षा हज़ार गुना अधिक है|" यह सन्देश उनके स्त्री के प्रति समानता के भाव और राष्ट्र के प्रति गर्व को दर्शाता है| आज के भारत को चाहिए कि स्त्रियों को समानता का अधिकार मिले और उनका सम्मान किया जाए| स्वामी जी निष्काम कर्म को ही सर्वोत्तम मानते थे| उनका कहना था कि हमें ग्रहण करना चाहिए ताकि हम दे सकें| अतः बदले में कुछ नहीं मांगना चाहिए क्योंकि हम जितना अधिक देंगे उतना ही अधिक पाएंगे| ऐसे विचार ही भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने में सहायक होंगे| आज के युवा को आत्म निरीक्षण करने की नितांत आवश्यकता है और एक लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने हेतु अनवरत परिश्रम करने की ज़रूरत है| स्वामी जी ने कहा था-"भारत तभी जागृत हो सकता है जब सैकड़ों निःस्वार्थ युवक-युवतियाँ अपने जीवन की समस्त सुविधाओं को त्यागकर स्वयं को लाखों देशवासियों की सेवा में समर्पित कर दें|" यह लेख आज की युवा पीढ़ी से यही प्रश्न पूछता है- "क्या हम उन सैकड़ों युवाओं में शामिल हैं?" हमें इस विषय पर आत्म-निरीक्षण और आत्म-चिंतन करने की आवश्यकता है| भारत-जागृति और तद्नुरूप विश्व जागृति के लिए यह नितांत आवश्यक है| स्वामी जी के निम्नलिखित विचार युवा वर्ग को निश्चित ही साहसी बनाएँगे:-

> "न तो मैं भविष्य को देखता हूँ, न ही भविष्य की चिंता करता हूँ| किन्तु एक दृश्य मेरे सामने जीवंत स्पष्टता से दिखाई देता है कि हमारी यह प्राचीन भारतमाता पुनः एक बार जागृत हो चुकी हैं और अपने सिंहासन पर पूर्व से अधिक आलोक के साथ विराजमान हैं| आइए, शांति एवं मंगल वचनों से पूरे विश्व के सम्मुख इसकी उद्घोषणा करें|"

'डेक्सटर' कार्टून से

'डेक्सटर' सीरीज़ तक

'बचपन' सुनते ही सबसे पहले आपके दिमाग में क्या आता है?... इस विषय में थोड़ा-सा विचार कीजिए और फिर देखिये कैसे आप स्वयं को यादों की दुनिया में विचरण करते हुए पाएँगे| वो हमारा खिलौनों से खेलना, ढेर सारी शरारतें करना, अपनी मनपसंद चीज़ को पाने के लिए ज़िद करना और रूठ जाना और फिर मम्मी-पापा का प्यार से समझाना... कितनी ही ऐसी यादें होंगी जिनको सोचकर फिर से वो बचपन जीने का मन करता होगा |

बचपन के कार्टून्स तो आपको याद ही होंगे| स्कूल की घंटी बजी नहीं कि हम दौड़ते हुए घर जाकर सीधे टी.वी. के सामने बैठ जाते थे| *Dexter, Swat Cats, Tom & Jerry, Johney Quest, Talespin, Powerpuff Girls, Mickey Mouse, Alladin, Duck Tales, Simpsons, Scooby-Doo* आदि कार्टून्स में तो मानो हमारी दुनिया ही बसी हुई थी| उस वक्त हम ***"देख-भाई-देख", "शकालका बूम-बूम", "शक्तिमान", "सोनपरी", "हम पाँच", "स्माल वंडर"*** और ऐसे ना जाने कितने कार्यक्रम बड़े ही चाव से देखते थे|

इन्हीं सबके साथ हमारा जीवन भी आगे बढ़ता रहा और पता ही नहीं चला कि जिंदगी की दौड़ में कब हम बड़े हो गए| टेलीविज़न की बात करें तो पहले हम बस हिंदी कार्यक्रम ही देखते थे और हॉलीवुड की तो कुछ गिनी-चुनी मूवीज़ ही देखा करते थे| उस समय हमें विदेशी चैनलों पर आने वाली टी.वी. सीरीज़ की कोई भनक भी नहीं होती थी| पर अब देखिये, हर कोई *F.R.I.E.N.D.S., Sherlock, Prison Break, Bing Bang Theory, How I Met Your Mother, Suits, Game of Thrones, Two and A Half Men, Dexter, Vampire Diaries,* आदि सीरीज़ देखना अपनी शान समझता है| सब लोग हॉलीवुड मूवीज़ और कलाकारों के पीछे पागल हैं| इसके पीछे सबसे बड़ा योगदान है- इंटरनेट का| जिन फ़िल्मों की सी.डी. आने में ज़माने लग जाते थे वो आज सिर्फ़ एक क्लिक की दूरी पर उपलब्ध हैं | देखते ही देखते हमारी पसंद बड़ा सी गयी है |

जब से साइबर-संसार ने दस्तक दी है, तभी से यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ है| इंटरनेट ने हमें देश-दुनिया की तमाम गतिविधियों से परिचित कराया और हमने भी अपने को वैश्विक-पद्धति के अनुसार ढाल लिया| इन सबने हमारी जीवन-शैली को ही बदल दिया है| अपने कॉलेज का ही उदहारण ले लीजिये- हर दूसरे कमरे में आपको ये मनोरंजन के ये सब साधन चलते हुए मिल जाएँगे| और ख़ास तौर पर यहाँ, DC एक ऐसी चीज है जिसके बिना आप अपने बिट्सियन जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते| किसी भी नई मूवी या सीरीज़ के बस आने की देर होती है और आप उसे अपने लैपटॉप पर देख रहे होते हैं |

आज भी जब मैं अपने बचपन के बारे में सोचता हूँ तो बस यही ख्याल आता है की वो भी क्या दिन थे जब हमारे पास न कोई परेशानी थी, न इतनी व्यस्तता और न ही कोई काम करने की जल्दी |

अपनी जिंदगी भी परियों की कहानी जैसी लगती है| कार्टून्स की तरह हमारा स्वच्छंद मन भी हमसे सबकुछ करवाता था| परन्तु, अब हमारी प्राथमिकताएँ बदल गयीं हैं, जिम्मेदारियाँ बढ़ गयीं हैं और शौक भी बदल गए हैं| भले ही कुछ फूहड़ चुटकुले और व्यर्थ के संवाद हमें थोड़े समय के लिए प्रफुल्लित करते हों, पर इन सब परिवर्तनों को आत्मसात करने से पहले इनकी व्यापकता, प्रचलन और सही-गलत का ध्यान रखना आवश्यक है| पाश्चात्य सभ्यता का असर तो हम सभी पर दिख ही रहा है और यह हमारी उदार विचारधारा को भी दर्शाता है लेकिन फिर भी हमें अपनी संस्कृति और मर्यादाओं को समझना होगा| संगीन धारावाहिकों को अवश्य देखें परन्तु उन मासूम कार्टून्स की दुनिया से भी कभी दूरी ना होने दें| बड़प्पन दिखाएँ मगर बचपना ना खोने दें | बाकी ज़िन्दगी की गाड़ी तो आगे बढ़ रही है...बढ़ती ही रहेगी |

-पारस अग्रवाल

बिट्सियन लाइब्रेरी

पुस्तकालय, किताबघर, वाचनालय, साहित्यिक ग्रंथालय – जिस भी नाम से पुकारो ये सभी उस स्थान की तरफ़ इंगित करते हैं जहाँ नूतन विचारों को नयी गति मिलती है, जहाँ भविष्य की असीम आकांक्षाओं की नींव पड़ती है और जहाँ इतिहास में दबे हुए सैकड़ों राज़ पुनः प्रज्वलित हो उठते हैं| इन शब्दों को पूर्णतः साक्षर करती है हमारी अपनी बिट्स लाइब्रेरी (बिट्सियन शब्दावली में बोले तो "बिट्स लाइब")| कॉम्प्री में फोड़ने का या फूटने से बचने का असीम दबाव हो या सेंटी सेम में प्रतियोगी परीक्षाओं की पढ़ाई, बिट्स लाइब का वाई-फाई हो या फोटोकॉपी की ज़रूरत, कैम्पस में अपने 4 वर्ष के पूर्ण काल में आप सभी ने एक ना एक बार तो इस पवित्र स्थान में कदम ज़रूर रखा होगा| और अगर नहीं रखा है तो शायद इस स्थान की कुछ रोचक जानकारियाँ जानने के बाद आप ज़रूर यहाँ आना चाहेंगे| तो आइये चलते हैं बिट्सियन लाइब्रेरी के अनोखे सफ़र पर|

जब 1962 में बिट्स विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी तब हमारी लाइब्रेरी इस विशाल क्लॉक टावर के मध्य में हुआ करती थी| दाहिनी ओर सन्दर्भ पुस्तकों का तो बायीं ओर सामान्य किताबों का खंड था| उस समय पुस्तकालय में तकरीबन 2.1 लाख किताबों का भण्डार था जिनके रख-रखाव और पाठकों के लिए भी पर्याप्त व्यवस्था हुआ करती थी| शनैः-शनैः बीतते समय के साथ जब 90 का दशक आया तो बिट्स पिलानी अपने नए स्वरुप में ढलने के लिए तैयार हो रहा था| बदलते ज़माने की ज़रूरतों और बच्चों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए लाइब्रेरी के नवीनीकरण की नितांत आवश्यकता महसूस की गयी|

इस वृहद एवं खूबसूरत पुस्तकालय के निर्माण कार्य की बागडोर श्री संजय मुंद्रा को दी गयी जो उस वक्त बिट्स पिलानी के सिविल इंजीनियरिंग संभाग के प्रोफ़ेसर मुंद्रा के बेटे थे| सन् 2000 में शुरू हुआ निर्माण कार्य 3 साल के कड़े परिश्रम के बाद 2003 में जाकर पूर्ण हुआ| बिड़ला परिवार के महत्वपूर्ण सदस्यों, श्रीमती सरला बिड़ला, प्रोफ़. वेंकटेश्वरन एवं अन्य बड़ी हस्तियों की उपस्थिति के बीच इस खूबसूरत ईमारत का लोकार्पण किया गया| 2004 में एल.टी.सी. कॉम्प्लेक्स, जो इस योजना का एक अंतरंग हिस्सा था, का उद्घाटन भी संपन्न हुआ| गौरतलब है कि ये उद्घाटन पहले प्रख्यात वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा होना था परन्तु चुनाव के चलते ये संभव नहीं हो सका|

किले जैसी रूपरेखा, तोप सरीखे छेद एवं प्राकृतिक चीज़ों से निर्मित अद्भुत चित्रकलाएं इसके बाहरी भाग को सुशोभित करते हैं| "गुरु-शिष्य" परंपरा पर आधारित इस लाइब्रेरी की बाहरी खूबसूरती जितनी काबिल-ए-तारीफ़ है इसका आतंरिक सौंदर्य भी उतना ही मोहक है|

ऊँची छतें, विशाल झूमर तथा शीशे का गुंबज इस लाइब्रेरी को और भी भव्यता प्रदान करते हैं| बुद्ध, गुरु नानक व कृष्ण की भगवद्गीता का पाठन करते हुए कुछ चित्रकलाएं भी अपने आप में अनोखी हैं| पर्यावरण के प्रति अनुकूलता भी इस ईमारत की खासियत है| सूर्य की रौशनी का उपयुक्त प्रयोग करने से प्रत्येक माह कम से कम 20000 रूपये की बचत होती है| इसकी ऊँची छतें तापमान नियंत्रण में सहायक सिद्ध होती हैं| अतः एक प्रकार से देखें तो इस सम्पूर्ण पुस्तकालय की शिल्पकला राजस्थान की राजसी विरासत से मेल खाते हुए भी स्वयं में आधुनिकता और नयेपन की ताज़गी समेटे हुए है|

हमारे पुस्तकालय में तकरीबन 2,32,117 किताबें संकलित की गयी हैं जिनमें से प्रतिदिन 567 के करीब जारी की जाती हैं और औसतन 543 छात्र-छात्राएँ यहाँ प्रतिदिन पढ़ने आते हैं| इंटरनेट जर्नल्स की मांग बढ़ने के कारण अब 7000 जर्नल्स उपलब्ध हैं जो 2 -3 वर्ष पूर्व 5000 ही थे| 30 लोग यहाँ कार्यरत हैं और हर वर्ष 2500 अतिरिक्त किताबें इस लाइब्रेरी में उपलब्ध होती हैं|

वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. ईश्वर भट्ट से बात-चीत में उन्होंने बताया कि उनके अनुसार एक पुस्तकालय की सर्वाधिक उपयोगिता तभी साकार होती है जब सभी छात्र ज़रूरत के समय बड़ी आसानी से अपनी मन पसंद पुस्तक खोज सकें और उसका पूर्ण लाभ उठा सकें| आने वाले समय की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कई योजनाएं तैयार की हैं| सभी किताबों को सूचीबद्ध करना, सम्पूर्ण कर्मचारी दल को प्रशिक्षण देना तथा ई-रिसोर्सिंग इनके प्रमुख उद्देश्यों में शामिल हैं| अनेक अनचाही पुस्तकों को हटाने तथा उनके स्थान पर नयी किताबों को ई-बुक के रूप में उपलब्ध कराने पर भी इनका ध्यान केंद्रित है|

एक सुकून भरा शांत वातावरण, ज्ञान का असीम भण्डार और हमारी सबसे अच्छी दोस्त किताबों का साथ- बिट्स की लाइब्रेरी इन सभी पैमानों पर खरी उतरती है| चाहे उस वक्त का क्लॉक टावर में स्थित पुस्तकालय हो या फिर आज की शानदार लाइब, कैम्पस पर 4 वर्ष व्यतीत करने वाले हर विद्यार्थी को ये जगह सदैव याद रहेगी| तो आशा करता हूँ कि जिन महानुभावों ने अब तक इस पावन पुस्तकालय में पदार्पण नहीं किया है वो कृपया शीघ्र से शीघ्र ये पुण्य का काम करें| आमिर खान के शब्दों में कहूँ तो – "हर जगह ज्ञान बँट रहा है, बटोर लो !!!"

-अंकिता दैया

तुम निश्चिंत रहना!

कर दिए लो आज गंगा में प्रवाहित
सब तुम्हारे पत्र, सारे चित्र, तुम निश्चिन्त रहना.

धुंध डूबी घाटियों के इन्द्रधनुष तुम,
छू गए नत भाल ,पर्वत हो गया मन
बूंद भर जल बन गया, पूरा समंदर
पा तुम्हारा दुख, तथागत हो गया मन
अश्रु जन्मा गीत कमलों से सुवासित
यह नदी होगी नहीं अपवित्र, तुम निश्चिन्त रहना

दूर हूँ तुमसे, न अब बातें उठें
मैं स्वयं रंगीन दर्पण तोड़ आया,
वह नगर, वे राजपथ, वे चौक-गलियाँ
हाथ अंतिम बार सबको जोड़ आया,
थे हमारे प्यार से जो-जो सुपरिचित,
छोड़ आया वे पुराने मित्र, तुम निश्चिंत रहना

लो विसर्जन आज वासंती छुअन का,
साथ बीने सीप-शंखों का विसर्जन,
गुँथ न पाए कनुप्रिया के कुंतलों में,
उन अभागे मोर पंखों का विसर्जन,
उस कथा का जो न हो पाई प्रकाशित,
मर चुका है एक-एक चरित्र, तुम निश्चिंत रहना ||

- अनुराग श्रीवास्तव

इस बरस की होली !!!

- अर्चित अग्रवाल

याद तो ज़रूर आयेंगे वो खेल कीचड़ के,
वो मस्ती गली की टोली में,
ना होगी गुजियों की मिठास,
ना होगी तुम मेरे पास,
इस बरस की होली में|

जब खोया पाओगी खुद को,
गगन की उड़ती पतंगों में,
जब अनजाने में ही मुस्का दोगी,
देखकर कशिश फूलों के रंगों में,
जब अंगूर के बागों की मस्ती,
सपनों में आने लगेंगी,
जब तन्हाई की गूँज तुम पर
अपना जोर जताने लगेंगी|
तब ढूँढोगी फिर वही बचपन
अपने लल्ले की नन्ही हथेली में|
ना होंगी गुजियों की मिठास,
ना होगी तुम मेरे पास,
इस बरस की होली में|

जब बेबात ही रूठ जाने पर
सजना तुम्हें मनाएंगे,
जब कुटुम्ब के वो सारे नियम,
अकसर तुम्हें सताएंगे|
जब चौथ के चाँद तले,
कोई पानी तुम्हें पिलाएगा,
जब हाँड़-मांस की काया पर,
अपना हक़ कोई जताएगा|
तब ढूंढोगी सब स्वच्छंद पलों को,
सिन्दूर,मेहंदी,महावर की लाली में|
ना होगी गुजियों की मिठास,
ना होगी तुम मेरे पास,
इस बरस की होली में|